भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 18 | उदयपुर शुक्रवार 01 अक्टूबर 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

17 सितम्बर 2021 को 71वें वर्ष में प्रवेश पर –

नरेंद्र मोदी से जुड़े कुछ अनछुए पहलू : शब्द रंजन में पहलीबार

- आत्मदीप -

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व व कृतित्व के कुछ अनछुए पहलुओं को सामने लाने वाला यह साक्षात्कारपरक आलेख 'जनसत्ता' के विशेष संवाददाता व राज्य सूचना आयुक्त रहे आत्मदीप द्वारा मोदीजी से की गई बातचीत पर आधारित है। यह बातचीत मोदीजी से उनकी कार्यप्रणाली को जानने-समझने के लिये अनौपचारिक थी जब वे मुख्यमंत्री थे।

बात पुरानी है, पर आज भी प्रासंगिक है। यह अनौपचारिक बातचीत नरेन्द्र मोदी की बनावट के कुछ अनकहे पहलुओं पर रोशनी डालती है। तब मोदी दूसरी बार गुजरात के मुख्यमंत्री थे और विधानसभा चुनाव करीब थे। उनके अनायास बुलावे पर उनके घर पहुंचे तो उन्होंने सबसे पहले हमारे हालचाल पूछे। हमने भी हालचाल पूछते हुये कहा- आप इतने बड़े सरकारी घर में अकेले रहते हैं। आप पर काम का काफी दबाव रहता है। नतीजे में आपने अभी तक एक भी दिन की छुट्टी नहीं ली है। आप लगातार ऑनलाइन और ऑफलाइन घंटों काम करते हैं। ऐसे में आप परिवार के किसी सदस्य को अपने साथ क्यों नहीं रख लेते, ताकि वह आपके खानपान, विश्राम आदि का ध्यान रख सके।

> ''रोजाना 24 घंटे में से लगभग दो तिहाई समय काम करता हूं। मेरी दिनचर्या सुव्यवस्थित है। मैं अपने खानपान और फिटनेस का पूरा ध्यान रखता हूं। इसलिये मेरे बीमार पड़ने की खबरें नहीं सुनी होगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मिले संस्कार और प्रशिक्षण ने मुझे स्वावलम्बी बनाया है। सांसारिक जीवन में आमतौर पर होने वाली अपेक्षाएं भी मुझ में नहीं हैं।
>
> अच्छे वस्त्रविन्यास का, सुशोभन दिखने का शौक जरूर है। चापलूसों से जितना दूर रहेंगे, उतने ही जमीन से जुड़े रहेंगे। चापलूसों से दूर रहने से आपका कीमती वक्त बचता है। मैं यही करता हूं। इसी कारण मेरे पास पर्याप्त समय होता है, जिसे मैं कम्प्यूटर पर बिताता हूं। इससे मुझे रोजाना काम की काफी जानकारियां भी मिलती हैं।
>
> मैं जिनसे भी मिलता हूं, उन्हें अपना क्वालिटी टाइम देता हूं। बातचीत के दौरान सिर्फ मैं और वो ही होते हैं, और कोई नहीं। इससे दोनों के बीच विचारों का आदान-प्रदान पूर्णतः हो पाता है। इससे उन्हें भी संतोष मिलता है और मुझे भी। इसलिये मैने स्टाफ को कह रखा है कि जब मैं किसी से भेंट करूं, तब कोई फोन, फाइल या व्यक्ति हमारे बीच नहीं आना चाहिये। मैं एरोगेंट हूं और हूं तो हूं। इसके अलावा और कोई आरोप मुझ पर चिपकता ही नहीं। भ्रष्ट या अनैतिक होने का आरोप तो कोई लगाता भी नहीं।'' - **मोदी**

मोदी का जवाब समझने लायक था। यह जवाब बताता है कि वे अपनी छवि के प्रति कितने सतर्क रहते हैं। उन्होंने जवाब दिया- मोरारजी देसाई कितने कट्टर नैतिकतावादी थे। उन्होंने प्रधानमंत्री निवास में बेटे कांति देसाई को साथ रखा। इसके कारण मोरारजी की छवि पर कैसे आंच आई। इसलिये मैं किसी को साथ नहीं रखता। मैंने अपने परिवार वालों को साफ कह रखा है कि वे कभी भी मेरे मुख्यमंत्री निवास में पांव न रखें। उन्हें जब भी मेरी जरूरत हो, मुझे फोन करें, मैं उनके पास दौड़ा चला आऊंगा। उन्हें मेरे पास आने की जरूरत नहीं। आये तो लोग उनके साथ फोटो खींचकर, नजदीकी दिखाकर दुरूपयोग करने का प्रयास कर सकते हैं, अनावश्यक विवाद खड़े हो सकते हैं।

मोदी बोले- जहां तक मेरी देखभाल का सवाल है, इसके लिये मुझे किसी सहारे की जरूरत नहीं। मैं अपना ध्यान खुद रख सकता हूं। रोजाना 24 घंटे में से लगभग दो तिहाई समय काम करता हूं। फिर भी मेरी दिनचर्या सुव्यवस्थित है। मैं अपने खानपान और फिटनेस का पूरा ध्यान रखता हूं। इसलिये आपने मेरे बीमार पड़ने की खबरें नहीं सुनी होंगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मिले संस्कार और प्रशिक्षण ने मुझे स्वावलम्बी बनाया है। सांसारिक जीवन में आमतौर पर होने वाली अपेक्षाएं भी मुझ में नहीं हैं। अच्छे वस्त्रविन्यास का, सुशोभन दिखने का शौक जरूर है।

परिवार के हालचाल पूछने पर मोदी ने बताया कि जिस कमरे में बैठकर हम बात कर रहे हैं, उतने से कमरे में मेरी मां रहती है। वो आज भी दस-बीस रूपये वाली हवाई चप्पल पहनती है। मेरे उस घर में फर्नीचर के नाम पर एक प्लास्टिक की कुर्सी है। भाईबंद अपने छोटे-मोटे काम धंधे से गुजारा करते हैं।

हमने कहा, अभी तक हम जितने भी मुख्यमंत्रियों के निवास पर गये, वहां काफी तामझाम देखा। नेताओं, कार्यकर्ताओं, अफसरों, कर्मचारियों आदि का जमावड़ा देखा। लेकिन आपके मुख्यमंत्री निवास पर ऐसा कुछ नहीं दिखा, बल्कि एकदम उलटा नजारा दिखा। इस निवास के बाहरी प्रवेशद्वार से लेकर भीतर तक बहुत ही कम अधिकारी-कर्मचारी दिखे। नेता, कार्यकर्ता वगैरह तो नजर ही नहीं आये। इस बड़े फर्क की कोई खास वजह?

मोदी बोले- अपने पास उतने ही चुनींदा अधिकारी-कर्मचारी रखता हूं, जितने की वाकई जरूरत है। नेता, कार्यकर्ता, अफसर आदि जो भी मिलने आते हैं, उन्हें बात होते ही यहां से रवाना कर देता हूं। काम होने के बाद किसी को यहां रूके रहने नहीं देता। रूके रहे तो फोटो खींचकर नजदीकी दिखाकर बेजा इस्तेमाल करने की आशंका रहती है।

आपने मुख्यमंत्री निवास में छाई सन्नाटे की स्थिति की खास वजह पूछी तो उसका जवाब यह है कि अगर आप चापलूसों से घिरे रहते हैं तो वो आपका यशोगान करने में आपका मूल्यवान समय बर्बाद करते हैं और आपको जमीनी हकीकत का अहसास नहीं होने देते। आप चापलूसों से जितना दूर रहेंगे, उतने की जमीन से जुड़े रहेंगे। चापलूसों से दूर रहने से आपका कीमती वक्त बचता है। मैं यही करता हूं। इसी कारण मेरे पास पर्याप्त समय होता है, जिसे मैं कम्प्यूटर पर बिताता हूं। इससे मुझे रोजाना काम की काफी जानकारियां भी मिलती हैं।

हमने कहा, आप-हम करीब पौने घंटे से बात कर रहे हैं। इस दौरान न आपके पास कोई फाइल आई, न आपके फोन की घंटी बजी और न ही कोई स्टाफ किसी काम से भीतर आया जबकि दूसरे मुख्यमंत्रियों के यहां ऐसा नहीं होता। उनसे इतनी लंबी बातचीत के दौरान बीच-बीच में किसी-न-किसी रूप में व्यवधान आते रहते हैं। यह बड़ा अंतर कैसे ?

'ढाई बरस रो राज करेगा'

बात उस समय की है जब अहमदाबाद के वलाद नामक गांव में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के प्रसिद्ध स्थान काली कल्ला धाम के गादीपति सरजुदासजी वैष्णव ने कल्लाजी के भाव में बताया कि 'ढाई बरस रो राज करेगा।' उनकी इस भविष्यवाणी का आशय तब मैं नहीं समझ पाया था।

उसके बाद उनकी गादी पर तो कईबार जाना हुआ पर यह बात अनबुझी ही रही फिर तो सरजुदासजी 'बापूजी' भी चल बसे। आज जब सोचता हूं तो उस कथन का स्वतः ही अर्थ मेरे मन में जवाब बनकर दस्तक दे रहा है। वह बात नरेन्द्र मोदी के लिए कही थी तब वे गुजरात के तीसरी बार मुख्यमंत्री थे जिन्हें ढाई वर्ष पूरे हो रहे थे।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

मोदी बोले- मैं जिनसे भी मिलता हूं, उन्हें अपना क्वालिटी टाइम देता हूं। बातचीत के दौरान सिर्फ मैं और वो ही होते हैं, और कोई नहीं। इससे दोनों के बीच विचारों का आदान-प्रदान पूर्णत: हो पाता है। इससे उन्हें भी संतोष मिलता है और मुझे भी। इसलिये मैने स्टाफ को कह रखा है कि जब मैं किसी से भेंट करूं, तब कोई फोन, फाइल या व्यक्ति हमारे बीच नहीं आना चाहिये।

हमने कहा, कुछ लोग आपको अड़ियल क्यों मानते हैं? आपके कपडों पर भी सवाल उठाते हैं। मोदी ने सहज भाव से स्वीकार किया-हां, मैं एरोगेंट हूं और हूं तो हूं। इसके अलावा और कोई आरोप मुझ पर चिपकता ही नहीं। भ्रष्ट या अनैतिक होने का आरोप तो कोई लगाता भी नहीं। ताजा मिसाल देखिये, जो बताती है कि मुख्य विपक्षी दल के पास मुझ पर आरोप लगाने के लिये क्या सामान बचा है। हाल में कांग्रेस के सभी प्रमुख नेताओं की मौजूदगी में अहमदाबाद में कांग्रेस का बड़ा सम्मेलन हुआ। उसमें मुझ पर सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया कि मोदी के पास 250 जोड़ी कुर्ते-पायजामे हैं। और तो कोई आरोप उनको सूझा ही नहीं। मैंने भी सार्वजनिक रूप से इस आरोप को सहर्ष स्वीकार किया, साथ में यह भी कहा कि कांग्रेस नेताओं ने 50 के आगे 2 का आंकड़ा या 25 के बाद शून्य गलती से लगा दिया है।

हमने कहा, आपके मुख्यमंत्री निवास का प्रवेशद्वार मालूम नहीं था। सो, दो गेट पर भटकने के बाद हम प्रवेशद्वार पर पहुंचे। तीनों गेट पर हमें किसी ने रोका-टोका नहीं। तीनों जगह मात्र दो-दो सुरक्षाकर्मी खड़े दिखे। उनके पास भी कोई खास हथियार नहीं थे। मुख्य प्रवेशद्वार के बाहर सांकेतिक अवरोधक लगा था। वहां कार रोकने पर बिना वर्दी वाले शख्स ने सिर्फ हमारा नाम पूछा और बेरिकेड हटा दिया। आपके निवास के द्वार पर भी बिना वर्दी वाला आदमी खड़ा था।

उसने मुझे कहा कि आप अंदर आ जाइये। आपकी गाड़ी चला रहा शख्स पार्किंग में गाड़ी लगा देगा। इस पर मैंने कहा कि ये ड्राइवर नहीं है। मेरे मित्र हरीश नीमा हैं इसलिये मैं भी पार्किंग में जाकर इन्हें साथ लेकर जाऊंगा। यह सुनकर उस आदमी ने हमें पार्किंग में न भेजकर सीधे आपके पोर्च में हमारी गाड़ी लगवा दी।

हमने यह भी कहा कि हमने आपको न तो हमारी कार का नम्बर बताया था और न ही साथ आये मित्र का नाम। फिर भी हमारी गाड़ी की कोई जांच नहीं हुई। अन्य मुख्यमंत्रियों से मिलने जाने पर उनके निवास पर तैनात सुरक्षाकर्मी आगंतुक रजिस्टर में देखते हैं कि मिलने वालों की सूची में हमारा नाम है या नहीं। फिर कार की पूरी जांच करके ही अंदर जाने देते हैं पर यहां ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। मुख्य प्रवेशद्वार पर भी मेटल डिटेक्टर और सुरक्षा का तामझाम नहीं दिखा। ऐसा क्यों, जबकि आपको जेड प्लस सुरक्षा प्राप्त है।

मोदी बोले- दिखाई देने वाली (विजिबल) सुरक्षा व्यवस्था से बचाव सुनिश्चित होता है क्या? आतंकी हमले के कितने नये तरीके आ गये हैं। उनके आगे दिखावटी सुरक्षा कारगर नहीं होती भाई। इंदिरा गांधी को तो उन्हीं के सुरक्षा गार्डों ने प्रधानमंत्री निवास में ही मार डाला। उनके बाद प्रधानमंत्री राजीव गांधी को सर्वोच्च सुरक्षा प्राप्त होने के बावजूद कैसे सरे आम बम से उड़ा दिया गया। मोदी के इस जवाब से साफ हुआ कि वे अदृश्य सुरक्षा व्यवस्था पर ज्यादा भरोसा करते हैं।

पोथीखाना

अवसाद और विकल वियोग से परे शोषण मुक्त संभावना के सुमधुर गीत

'गीत-समय' में भरोसा देने वाले गीतों का सरस संग्रह है। वर्तमान समय के कविमंचों के लोकप्रिय गीतकार अमृत वर्षीय किशन दाधीच का यह प्रथम संग्रह है। इसकी भूमिका शीर्ष गीतकार नंद चतुर्वेदी ने लिखी पर यह संग्रह अब उनके निधन के पश्चात प्रकाशित हो रहा है।

फ्लैप पर ही पुस्तक परिचय में लिखा गया है- 'पुस्तक के गीत ऐसे समय की पैदाइश है, जब लेखक और पाठक दोनों में रस के स्रोत बचे हुए थे। यह आकस्मिक नहीं है कि इस पुस्तक के गीतों में उजाला कांपता है। यही वजह है कि इन गीतों में उदासी और करूणा का आलम लेखक के गीत स्वभाव का केन्द्र बन गया है। यह पुस्तक मौजूदा समय के राजनैतिक अभिप्रायों को व्यक्त करते हुए पाठक को सच्चाई का रास्ता दिखलाती है।

पुस्तक के दूसरे भाग में तीन लम्बी गीतात्मक स्वभाव की कविताएं हैं जिनमें उस लड़ते हुए आदमी की छवि है जो अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करता आया है। नि:सन्देह यह गीत और कविताएं अपने पाठक को उस अंधकार और उजाले से साथ-साथ परिचित कराएंगी जो इस समय की सच्चाई है और इस 'गीत-समय' की भी।'

लोकविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत लिखते हैं- 'समय की धार पकड़ते अनेक गीतकारों ने गीत रचना की कंचुकी छोड़ दी किन्तु किशन दाधीच ने अपना गेज नहीं बदला। वह काल की लगाम थामे अपने समय की हवाखोरी का आनन्द लेते गीत-मंच को सवाया सुललाम बनाते रहे। यह अद्‌भुत आख्यान ही है कि किशन दाधीच पिछले साठ वर्ष से गीत लिख रहे हैं। किशन दाधीच के गीत-प्रीत का पलेवण नहीं करते। श्रृंगार का शीशफूल नहीं जड़ते। काया को कंचनवर्णी कसक नहीं देते अपितु यथार्थ का बोध बांचते बेहतर बागवानी का बिलोवण करते, फटे बांस को अधर रस देते जीवन बसन्त की बांसुरी बनाते हैं।'

अपने कथ्य में कवि दाधीच ने अपनी रचनाधर्मिता तथा गीत प्रक्रिया पर कुछ महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त करते स्पष्ट किया है। वे लिखते हैं- 'कविता मेरे लिए महज एक शौक नहीं है। मैं उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए वचनबद्ध हूं। यह लड़ाई लम्बी है तथा तब तक जारी रहेगी जब तक प्रकृति और मनुष्य के लिए कल्याण का सोच विद्यमान रहेगा। मेरी दृष्टि में एक कविता सबसे पहले कृतिकार का वक्तव्य होती है। बाद में काव्यशास्त्र की कसौटी पर परखी जाने वाली कविता।

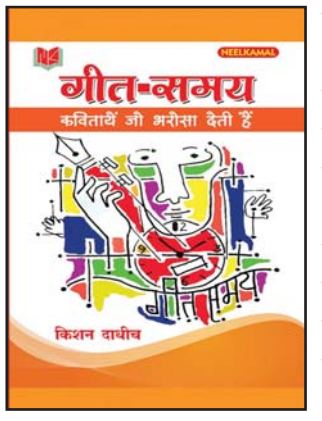

साहित्यकार समाज की एक संवेदनशील इकाई के नाते सामाजिक संघर्ष का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है। अपने समय की विसंगतियों पर चोट करने और राष्ट्र का मनोबल बनाये रखने की नैतिक जिम्मेदारी उसी की होती है। लेखक समाज में संस्कारों की प्रतिष्ठा करता है और निर्माण की प्रक्रिया को तेज करता है।

जो कविता परिवर्तन का आधार होती है, वह किसी मायने में एक हथियार होती है। जो कविता सर्वहारा की चिन्ता से तो जुड़ी हो किन्तु उसके पात्रों तक सम्प्रेषित नहीं होती हो तो वह एक वर्ग विशेष को सुख पहुंचाने वाली कविता ही कही जायेगी। अपने सृजन में कवि अपने स्वयं के आग्रह की शब्द रचना तो करता है किन्तु उसकी सामाजिक उपादेयता नहीं है।

जो लोग गीत को लिजलिजा और अप्रासंगिक बनाते हैं वे यह भूल जाते हैं कि इस देश में गीत-परम्परा कितनी प्राचीन और कालजयी रही है। हमारा समूचा भक्ति-काव्य और सुधार आन्दोलन गीत-रचना की ही धरोहर है। स्वतंत्रता के लिए लड़े गये संघर्ष में गीत की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्य में गद्य-गीतों की भी समृद्ध परम्परा है। मैं गीत को अपने सर्वाधिक निकट पाता हूं क्योंकि वह मेरी भावभूमि और सुगन्ध से उपजा है।

मैं जब घुटन महसूस करता हूं और कहीं किसी समय के प्रति प्रतिबद्ध पाता हूं तो लिखता हूं। जो भी स्थिति कवि को विशिष्ट और कविता को छोटा बनाती हो, उससे बचना चाहता हूं। कविता मेरी आजीविका नहीं है इसलिए इससे किसी प्रकार का अर्थ-लाभ प्राप्त करने की मेरी आकांक्षा भी नहीं है। मैं संवेदनशील इकाई होने के नाते अपनी अभिव्यक्ति के दायित्व से बच नहीं सकता इसलिए लिखता हूं। बिना लिखे रह भी नहीं सकता चाहे वह सृजन किसी भी शक्ल का हो।'

आधुनिक हिन्दी काव्यधारा के सशक्त हस्ताक्षर नंद चतुर्वेदी ने प्रारम्भ में प्रगतिशील कविता आन्दोलन और उसकी पीठिका में रचनाशील कविताओं पर लिखते गीतकार किशन दाधीच की सृजन क्षमता पर जो उल्लेखनीय भूमिका लिखी उसके कुछ अंश यहां द्रष्टव्य हैं-

'कवि की पैतृक-नगरी बूंदी है जो किसी समय 'छोटी काशी' के नाम से प्रसिद्ध थी। यहां कवि सूर्यमल्ल मिश्रण, कवि मतिराम, पत्रकार लज्जाराम मेहता, ऋषिदत्त मेहता, भाषाविद् डॉ. भोलाशंकर व्यास, शहीद रामकल्याण आदि की कीर्ति-गाथा अंकित है। यह एक तिलस्म की तरह ही होता है कि प्रतिभाशालियों के नगर बार-बार अपने गुणों की ऋतुओं का उत्सव मनाते हैं जिसमें कई पीढ़ियां शामिल होती हैं।

किशन दाधीच के गीत 'रसात्मकम्‌वाक्यम् काव्यम्' से व्याख्यायित नहीं होते। वे उन चिन्ताओं से व्याख्यायित होते हैं जो यह पूछती है-

ये कौन मांगता है जिन्दगी फटी कमीज की
खांसती हुई सुबह के कांपते उजास से

'गीत-समय' की कविताएं वस्तुत: उस प्रगतिशील कविता-आन्दोलन के उदाहरण हैं जो गैर-बराबरी, साम्प्रदायिकता, सामाजिक अन्याय, शोषण सबको अप-संस्कृति का अंश मानता है। जो हर उस आदर्श भाव को उत्कृष्ट मानता है जो नाना धर्मों, भाषाओं, संसकृतियों के प्रति उदार और सहिष्णु है और उस विलासिता, पूंजी-संग्रह और आमोद-प्रमोद को व्यर्थ मानता है जो वैमनस्य, प्रतिस्पर्धा और हिंसा के अराजक-असामाजिक भाव रचती है। दरअसल प्रगतिशील साहित्य और साहित्यकारों की दृष्टि में दुनिया के सुख-दु:ख मायावी, दैविक या दानवी, अलौकिक, अकल्पनीय नहीं हैं। वे अचिंत्य और दुर्बोध भी नहीं हैं। इसलिए प्रगतिशील कविता का रचाव बौद्धिक, आशावादी और वर्तमान के लिए होता है। कविता के उसी प्रगतिशील मुहावरे को काम में लेकर कवि ने अतुकांत लम्बी कविता लिखी है जिसका अंतिम अंश इस प्रकार है-

(1) जलसों की संस्कृति ने हमें दे दिये हैं
कुछ मुखौटे और छीपा लिया है आदमी।
(2) वसंत की पहचान बहुत पुरानी पड़ गयी है
मेरी कविता तुम समझ में आने वाली
इन ऋतुओं की साक्षी मत बनो।।

हिन्दी-कविता और कवियों के लिए यह माध्यम पारम्परिक, सुपरिचित और लोकप्रिय है। प्राचीन और भक्तिकाल से लेकर हिन्दी के तमाम आधुनिक बड़े कवियों ने 'गीत' लिखकर महान 'वाचिक' परम्परा का निर्वहन किया है। गीत की लय, ध्वनि, नाद कवि और श्रोता-समूह को भाव के आनन्द से जोड़ता है। इन सबका लाभ किशन दाधीच ने लिया है। नये गीत या नव-गीत इस अर्थ में नये हैं कि वे 'अवसाद' के नहीं 'आशावाद' के और व्यक्ति के 'विकल वियोग' के भी नहीं हैं बल्कि उस संभाव्य दुनिया के हैं जो शोषण-मुक्त और बंधुत्व की होगी।' कहना नहीं होगा कि 'गीत-समय' अपने समय के गीत-काव्य का, कवि के छह दशक के रचनाकर्म का सशक्त पारदर्शी आईना है जिसमें आने वाले कल के संभाव्य समय की भी सुदर्शना का ईमानदारी के साथ दिलासा और भरोसा अंकित है। आवरण शिल्पी डॉ. श्रीनिवासन् अय्यर अच्छे चित्रकार के साथ सुचिंचित लेखक कवि भी हैं।

- म. भा.

नीरज दइया की नंदजी से हथाई

'नन्दजी से हथाई' डॉ. नीरज दइया द्वारा सम्पादित पुस्तक है जिसमें प्रसिद्ध साहित्यकार नंद भारद्वाज से विभिन्न लेखकों एवं पत्रकारों द्वारा लिये गये 12 साक्षात्कार सम्मिलित हैं। इस पुस्तक में समय, समाज तथा साहित्य के अनगिनत सवालों पर नन्द भरद्वाज के सटीक विश्लेषणपूर्ण जवाब हैं जो उनके अब तक के साहित्यकर्म और मीडिया धर्म के इर्द-गिर्द हैं ।

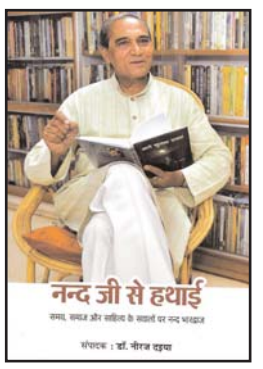

बहुमुखी प्रतिभा के धनी नन्दजी का इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व साहित्य और समाज के अनेक रंगों से विश्लेषित है। वे एकसाथ कवि, आलोचक, कहानीकार, उपन्यासकार, अनुवादक, सम्पादक, शोधवेत्ता, मीडियाकर्मी, राजस्थानी भाषा के समर्थक और जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के कॉरडिनेटर हैं । आकाशवाणी और दूरदर्शन में उच्चपदों पर रहते हुए उन्होंने अपने लेखन को एक दिशा दी तथा युवाओं का मार्ग प्रशस्त किया। इन्हीं विशेषताओं के होते अलका जैन, किशोर चौधरी, पद्मजा शर्मा, रेवतीरमण शर्मा, दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, निवेदिता शकील, नंदिनी रॉय, वंदनासिंह, दुष्यंत, श्याम जांगीड़, संजय बोहरा और दुलाराम ने उनसे लंबी मगर अनके साहित्य सृजन पर महत्वपूर्ण बातचीत की है ।

साहित्य की भाषा कैसी हो के सम्बन्ध में नन्दजी का सटीक जवाब रहा- 'जैसी भाषा एक लेखक अपने रोजमर्रा के जीवन व्यवहार में काम में लेता है, उसी बोलचाल की सहज भाषा को मैं साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिये उपयुक्त मानता हूं। उसमें अपने परिवेश और अंचल के शब्द सहज भाव से आएंगे तो उससे एक तरह की निजता भी पैदा होगी। उसी से उसमें काल-बोध और जीवन-विवेक दिखाई देगा।'

लेखन में कल्पना के तात्पर्य पर वे मानते हैं कि कल्पनाशीलता लेखन का बड़ा गुण है। कल्पनाशीलता से ही उसका कलात्मक पक्ष उभर कर आता है। कल्पनाशीलता में वायवीयता नहीं होनी चाहिये ।

अपने लम्बे कविकर्म के मध्यनजर नन्दजी सहजता से कहते हैं, 'समकालीन या किसी काल विशेष की रचना जिसमें समय बोलता है, वह अपने समय को अगर प्रतिबिम्बित करती है तभी पाठक को आकर्षित कर पाती है । उसकी दिलचस्पी पैदा होती है। आज की कविता या कि जिन विधाओं में लिखा जा रहा है, मुझे लगता है कि कोई संजीदा रचनाकार अपने समय की सच्चाई को भूलकर लिख ही नहीं पाता। कहानी या कविता में वह कहीं-न-कहीं जीवन की समस्याओं या परेशानियों से जुड़ा होता है। इसीलिये वह प्रासंगिक है और समकालीन भी। इसी से कवि और कविता की सार्थकता प्रमाणित होती है।'

इस संकलन में नन्दजी के कई शीर्ष-वक्तव्य अपने आप में पाठकों और नये लेखकों का ध्यान आकृष्ट करेंगे। यथा-

(1) साहित्य सामाजिक बदलाव का बेहतर माध्यम है।
(2) भाषा की असल शक्ति लोक से पहचानी जाती है।
(3) जनसंचार की निष्पक्षता लोकतंत्र का मूल आधार है।
(4) साहित्य-विकास के लिये अनुकूल वातावरण जरूरी है, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर फोकस जरूरी है।

पुस्तक के कवर पर नन्दजी बहुत सहजता से छाये हुए हैं जबकि इसके संपादक डॉ. नीरज ने बैक कवर पर अपना पूरा परिचय दिया है। नन्दजी का परिचय अन्दर के पृष्ठों में है जिसे पाठकों को ढूंढ़ना पड़ेगा। इसी तरह 'रचनात्मकता के विविध आयाम' में नीरज ने लगभग 15 पृष्ठों में अपना साहित्यिक कैरियर उकेरा है। एक किताब में दो साहित्यिक व्यक्तित्व हैं। वैसे नवांकुर लेखकों के लिये यह किताब बहुआयामी विषय लिये हुए है। नन्दजी और नीरज के लिये ये मील का पत्थर साबित होगी।

दो सौ पृष्ठीय यह पुस्तक बोधि प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित है। इसकी कीमत 250 रूपया है।

उल्लेखनीय है, राजस्थान में हथाई से तात्पर्य चौपाल से है जहां बैठकर लोग अनेक तरह की चर्चाओं से अगजग की जानकारियों से समृद्ध हुए मिलते हैं।

-डॉ. यश गोयल

अपने समय की साक्ष्य देती जीवंत अनुभूतियां

'पहल की अनुभूतियां' भंवरलाल शिशोदिया की जीवनयात्रा की कृति है। पुस्तक संयुक्त परिवार की महत्ता का प्रतिपादन कर सामाजिक सरोकारों से जोड़ती है। लेखक की स्वाध्यायी प्रवृत्ति, समाजसेवा, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन, प्रचलित रूढ़ियां, अंधविश्वास, मृत्युभोज, दहेज, प्रर्दाप्रथा तथा अशिक्षा को लेकर रचनात्मक पहल की अनुभूतियों को रेखांकित करती है।

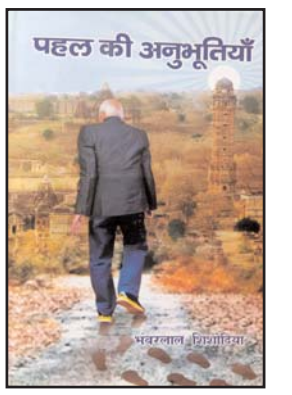

93 वर्षीय विधिवेत्ता शिशोदिया ने सर्वहारा वर्ग को न्याय दिलाने तथा वंचित वर्ग को मुख्य धारा से जोड़ने की दिशा में विभिन्न आन्दोलनों में अग्रणी रहकर लड़ाइयां लड़ी हैं। चित्तौड़गढ़ के विकास के प्रत्यक्षदर्शी रहने वाले शिशोदिया ने अपने विचारों से साहित्य, संस्कृति एवं भक्ति की धारा की त्रिवेणी प्रवाहित करने में जीवन समर्पित किया है। पारिवारिक स्नेह की अनुकरणीय झलक पुस्तक की विशेषता है।

वरिष्ठ साहित्यकार शिव 'मृदुल' द्वारा सम्पादित यह कृति शिशोदियाजी की जीवनधर्मिता का दस्तावेज है। कृति पठनीय, संग्रहणीय होने के साथ अपने समय की साक्ष्य एवं धरोहर है। शकुन्तलादेवी शिशोदिया स्मृति ट्रस्ट प्रकाश, चित्तौड़गढ़ से प्रकाशित इस कृति का मूल्य 300 रूपया है।

-डॉ. रमेश 'मयंक'

स्मृतियों के शिखर (129) : डॉ. महेन्द्र भानावत

गृहदेव पूरवजों की स्मृति में पूजा-अनुष्ठान के संस्कार

मेरी माताजी के कुल आठ संतानें हुईं। उन्होंने बताया कि सबसे बड़ी सोवन। फिर एक लड़का हुआ जिसका नाम भमरू (भंवरलाल) रखा गया। ये सात वर्ष ही जी सके। ये ही हमारे घर में एकमात्र पूरवज बने हैं। उसके बाद एक सवाया (सवाईलाल) हुए जो चार माह से अधिक जीवित नहीं रहे। एक लड़के का डेढ़ साल की उम्र में निधन हो गया। उसका नाम भी सवाई ही था। एक गर्भावस्था में ही चल बसा। कहते हैं जब माताजी ढूंढ़े में शौच के लिए गई तब वहां गडूरे को भगाने के लिए पत्थर फैंका। इस समय अधिक झुकने के कारण गर्भस्थ शिशु की जीवनीशक्ति जाती रही। इसके बाद नाथू (नरेन्द्र), मैं मिट्ठू (महेन्द्र) और बहिन सोबाक (सुधा) हुई।

पूरवज बावजी

जाहिर है, चार की मृत्यु के बाद जब पांचवीं संतान ने लड़के के रूप में जन्म लिया तो रंग-रूप में बहुत सुन्दर होने के कारण कहीं नजर नहीं लग जाए अत: उसे बहुत छिपा-छिपा कर अछन-अछन रखा गया। कहने को यही कहा कि लड़की हुई है। देवी अम्बामाता की बोलमा बोली गई। वह बालक को दीर्घजीवी तथा स्वस्थ रखे इसके लिए उदयपुर की अम्बामाता धाम से नारियल भेजकर चांदी की बनी नाक में पहनने की नथ मंगवाई गई और 'नाथू' नाम रखा गया। कुछ समय पश्चात पूरा परिवार तेरापंथी महाराज के दरसण करने गया। महाराज ने नवजात शिशु की नाक में नथ देखकर कहा- 'यह नथमल है क्या?' मां बोली- 'बावजी, कहीं पूछा नहीं है। आपने कहा है तो यही नाम सही।'

मृत्यु के पश्चात जो प्राणी देव के रूप में घर-परिवार के किसी सदस्य के शरीर में उपस्थित होते हैं वे पूर्व पुरुष पूरवज कहलाते हैं। जीवित रहते अपने स्वभाव के अनुसार मरणोपरान्त उपस्थित हो उसी तरह का आचरण करते हैं। पूर्व काल में जैसा उनका वाणी-व्यवहार, जीवनाचरण, मनेच्छाजनित सरोकार, कर्मक्षेत्रीय प्रभावना तथा आकस्मिक घटना-प्रसंग का परिदृश्य रहा, उसका दरसाव भी किसी-न-किसी रूप-दर्शन में देखने को मिलता है।

ये पूर्वज पुरुष, महिला तथा छोटे बच्चे भी होते हैं। सात माह के गर्भावस्था में किसी की मृत्यु होने पर भी सात मास्या पूर्वज बनते हैं। प्रकट होने का ये कोई-न-कोई संकेत दे देते हैं। कभी स्वप्न के माध्यम से तो कभी कोई व्याधि या अनहोनी घटना के माध्यम से ये अच्छा-बुरा संकेत देते हैं। परिवारजन को इसका आभास हो जाता है। कभी नहीं होने पर, परेशानी बढ़ने पर अनुभवी लोग बता देते हैं। किसी देव-देवरे पूछताछ से भी पता कर लिया जाता है। ऐसी स्थिति में विशेष संस्कारपूर्वक उनकी मनौती, मान-मनावण, सेवापूजा, अनुष्ठानमूलक रात्रिजागरण कर उनकी प्रतिष्ठा की जाती है तब समस्या का निदान हो परिवार में शान्ति-सुख का वातावरण प्रारम्भ हुआ लगता है। ऐसी मान्यता अनेक जातियों में है। उनमें अपने अलग रीति-नीतिगत संस्कार हैं जो बड़े दिलचस्प हैं।

नये बने पूर्वज को पहलीबार गृहप्रवेश दे बिठाने को उन्हें 'छाबणे बैठाना' कहा जाता है। ऐसी स्थिति में मुहूर्त के अनुसार जहां उन्हें बिठाना होता है उस स्थान की पूरी सफाई की जाती है। दूध-गोमूत्र की छींटा दिया जाता है। घर की पांच बहिन-बेटियां, बेनकुंवाइयों को नूता जाता है। सभी बड़ी प्रसन्नता के साथ तैयारी में लग जाते हैं।

इस दिन रात्रिजागरण किया जाता है। पूर्वज-देवता जिस खोल में हैं, उसके अनुसार, घरवालों की हैसियत के अनुसार चांदी अथवा सोने के पतरे पर मूरत बनवाई जाती है। इसके लिए सुनार को पहले से कह दिया जाता है। वहां से सूर्यास्त के बाद विधिपूर्वक महिलाएं जाकर पूरवज सम्बन्धी गीत गाती विशेष संस्कार के साथ मूरत को लाती हैं। उनके साथ ढोली ढोल बजाता चलता है।

देवता या तो हवा अर्थात् पवन या फिर सर्प जूण में या फिर दोनों रूपों में होते हैं। पवन-रूप में होने पर मृतक के अनुसार पुरुष या फिर महिला आकार की तथा सर्प-रूप में होने पर सर्प का चिन्ह लिए मूरत बनवाई जाती है। एक थाल में पुरुष-मूरत सफेद तथा महिला-मूरत लाल सवा फीट समचौरस कपड़े में लाई जाती है जो 'ओछाड़' नाम से जाना जाता है। जागरण के बाद मूरत ओछाड़ सहित कंडिये में रख दी जाती है।

रात्रिजागरण महिलाओं के पूरवज सम्बन्धी गीतों से शुरू होता है। इस समय भी ढोल बजाया जाता है। गीत के दौरान पूरवज को कसार, लपसी, खीर आदि के साथ घी की लगातार धूपकार धूपखेता कंडे के अंगारे पर धूप खेता रहता है। एक-के-बाद-एक कर पांच गीत गाती महिलाएं पूरवज बावजी के पधारने का आग्रह करती रहती हैं।

पूरवज विषयक गीतों में पूरवज आने का निमंत्रण स्वीकार कर नदी पर नहाने गये हैं। अच्छी तरह कपड़े-लत्ते धो रहे हैं। नहाधोकर कपड़े सूखा रहे हैं। बालों में तेल लगा ठीक से सिणगार कर रहे हैं जैसे वर्णन बड़े ही मोहक तथा ममत्व के सूचक हैं। पूरवज के आने में देरी पर पुन: वे ही गीत दोहराये जाते हैं।

पूरवज का जिस पर ममत्व होता है उसे आने का संकेत देते हैं। यह संकेत उसे बार-बार उबासी आने, गुमसुम बैठे रहने याकि अपने होने का भान नहीं रहने के रूप में होता है। अन्त में गीत की शक्ति उन्हें प्रकट होने को विवश कर देती है। वे तब जोर की हाक दिये उपस्थित होते हैं। जिसके शरीर में आते हैं उसे 'घोड़ला' कहते हैं। वहां बैठे सभी 'पधारो बावजी' कहते उनका अभिवादन करते हैं। उनसे सवाल कर जवाब मांगते हैं।

इस बीच पूछताछ शुरू करने वाले अपनी समस्या का जिक्र कर उनसे समाधान चाहते हैं। वे पास में रखे गेहूं-मक्की के 'आखे' देते हैं। उनमें पांच, सात या नौ की संख्या होने पर कार्य सिद्ध होने, सफलता मिलने का संकेत समझा जाता है। यह संख्या 'एकी' होती है जो शुभ मानी जाती है। 'बेकी' वाली संख्या चार, छह, आठ ठीक नहीं, अशुभ मानी जाती है। कभीकभाक इन दोनों में आखे का कोई कण साबुत नहीं होकर टूटा हुआ होता है तो वह 'अर्‌या' कहलाता है जिसका अर्थ उलझन आना, कार्य सिद्धि में बाधा अर्थात् व्यवधान होने की सूचना होता है।

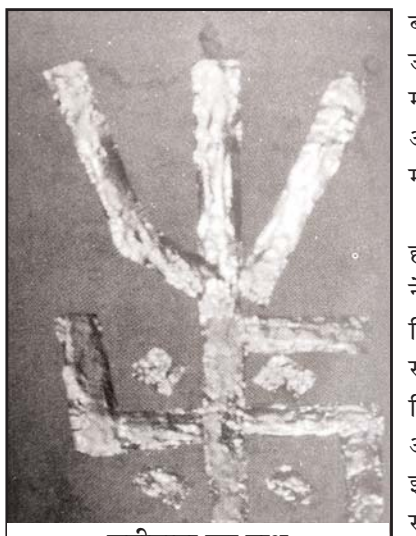

सतीमाता का हाथ

एक दिन मेरे निवास पर उदयपुर में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की गादी लगी। गादी पर सेवक श्री सरजुदासजी के शरीर में कल्लाजी बावजी का पधारना हुआ तब उन्होंने हमारे परिवार में एक सती होने की जानकारी दी। उन्होंने न केवल इसकी जानकारी ही दी बल्कि ऊपर एक कमरे में दीवार पर सिन्दूर मालीपन्ना का अंकन कर उनकी स्थापना भी कर दी। स्थापना का यह दिन वि. सं. 2039 ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी गुरूवार (6 मई, 1982) का था।

इस समय मैं, पत्नी श्रीमती प्रीतम, दोनों पुत्रियां कविता, कहानी, दोनों पुत्र मुक्तक, तुक्तक एवं भाणजी उमराव तथा भाणजा जंवाई श्री रोशनलालजी बाबेल उपस्थित थे। तब से कल्लाजी बावजी के आदेशानुसार सुबह-शाम पूरवज के साथ उन सतीजी की भी दीवा-बाती की जा रही है।

इन्हीं के पास पूर्वज (भंवरलालजी) का कंडिया रखा हुआ है। इनकी सोने की पवन और सरप की मूरत है। ये पूर्वज माताजी के डील में आते। आते समय जोर की हाक लगाते और खूब ओतरते। जमीन पर जोर-जोर से दायां हाथ पटकते लेकिन इन्होंने सदा घर की सहायता ही करी। जीजां ने बताया कि बावजी जैसे हाके-धाके थे वैसे ही सोरे-धोरे थे।

एकबार माताजी ने इनकी आखड़ी ली। आखड़ी में गुड़ खाना वर्जित था। एक दिन डालचन्दजी नलवाया (जीजां के देवर) के विवाह में गुड़ के बने ढोकले खा लिए तब माताजी तीन दिन तक बड़ी बेचैन रही। उन्हें लगा कि उनके पूरे शरीर में सांप चढ़ रहा है। यकायक काकी (माणकचन्दजी की पत्नी देऊबाई) को याद आया कि गुड़ की आखड़ी ले रखी है और ढोकले खा लिये सो पूर्वज बावजी का ही यह करिश्मा है। इस पर तत्काल बावजी से क्षमा मांगी गई और देखते-देखते दर्द जाता रहा।

एक रात गर्मियों की छुट्टियों में कानोड़ रातिजगा दिया। बहुत देर तक गीत गाये गये। धूप-ध्यान किया किन्तु बावजी ने पधारने का कोई संकेत नहीं दिया। यह सोच माताजी के कहने पर मैं व भाई साहब चांदनी पर जाकर सो गये। पीछे से कमलास गीत गाया गया तब अचानक बावजी का पधारना हुआ। उन्होंने खूब गुस्सा किया। खूब पछाड़ खाई। जीजां से कहा कि तेरे क्या जल्दी थी। जीजां बोली- 'बावजी आधी रात हो गई। गीत गाते-गाते थक गईं।' वे बोले- 'घड़ी देख कहां बारह बजी है? मैं तो एक पगवराणा खड़ा हूं।' तब चांदनी पर सोये हमें भी बुलाया गया। सबने कहा, 'गलती हो गई सो माफ करो। इतना कोप मत करो। सबको राजी रखो। आप तो मोटा पुरुष हो।' तब जाकर शान्ति हुई।

एकबार मां जिन्हें हम सब 'बाई' कहते, जीजां के सिर से जुंए निकाल रही थी कि यकायक ऊपर से सांप उनकी गोदी में आ गिरा। माताजी ने जोर से हाथ का टल्ला दिया कि सांप देखते-देखते गायब हो गया। इसी तरह एक समय पिताजी घोड़े पर खणची रख रहे थे कि उसमें से सांप निकला। रात्रि को प्राय: हर दूसरे-तीसरे रोज सांप बोलता तब कहते- 'बावजी बोलो मत, डराओ मत।'

भाई साहब डॉ. नरेन्द्रजी कोई दो वर्ष के थे कि उनकी अचानक आंखें आ गईं। ये आंखें बड़ी डबडबी हो गईं। वे जिद्दी बन गये। जमीन पर सोये नहीं। घुटनों पर या गोद में ही रहते। ज्योंही नीचे सुलाते कि रोना शुरू। यह रोना भी साधारण नहीं, बसुके ताण-ताण कर रोते, ऐसे कि उनकी तरसना नहीं देखी जाती। सभी ने यही कहा कि यह कोई शारीरिक बीमारी नहीं है, देवता की रखी हुई बीमारी है। तब देवता की रात जगाने की, उन्हें छाबणे बिठाने की बोलमा बोली गई। इसके बाद ऐसी कभी कोई घटना नहीं घटी।

एकबार जयपुर में भाई साहब के निवास तिलकनगर वाले मकान की नांगल के अवसर पर रात जगाई। तब सोचा गया कि बावजी की एक ही मूरत है जो मेरे पास उदयपुर है अत: यहां के लिए एक अलग मूरत बनवा ली जाय। नांगल का यह अच्छा अवसर था। भाई साहब ने एक सोनार से यह मूरत बनवा ली।

रात्रि को रात जगाने का कार्यक्रम था। हम सब सगे-समधी वहां थे ही। महिलाओं ने दो-दो, तीन-तीन बार सारे गीत गा लिए किन्तु बावजी का पधारना नहीं हुआ। भाई साहब और मैंने भी उस रात खूब धूप ध्यान किया पर बावजी का आह्वान करने में असफल रहे। महिलाएं बात करती रहीं कि इस मौके पर तो बावजी को पधार कर दो टेपी सन्तोष की बात कहनी थी।

जीजां बोली कि हमारे बावजी तो नखरे वाले नहीं हैं। इनकी तो हमारे पूरे परिवार पर सदा ही कृपा रही है। ऐसे भी मौके आये जब बिना बुलाये ही पधार गये। माताजी ने कहा- याद नहीं है क्या जब कानोड़ सोबाक और लाड़ी (भाभीजी) तालाब पर नहाने गये और लौट रहे थे तब रास्ते में भिश्तण मिली। घर आकर दोनों में कंपकंपी चढ़ आई तब तत्काल बावजी पधारे और कहा-'कोई फिक्र मत करना। मैं साथ था। भिश्तण की कुदृष्टि का कोई असर नहीं होगा।' और तब सबने सन्तोष की सांस ली। फिर उस डाकण नामी भिश्तण के सम्बन्ध में कई किस्से प्रारम्भ हो गये जिसने कानोड़ में कई महिलाओं का जीवन बर्बाद कर दिया था। उसके नाम से ही पूरा गांव थर्राता था। गांवों में डाकण, भूत, प्रेत, चुड़ैल का भय आज भी बुरी तरह व्याप्त है।

ऐसी बातें करते-करते रात्रि की एक बज गई। जीजां ने कहा- 'कमलास दो।' ऐसी मान्यता है कि रातिजगा के गीत चालू होते ही पूरवज देवता पधार जाते हैं और घर के बाहर एक पांव, अरवाणे पांव खड़े रहते हैं। कमलास देने पर ही अपने गंतव्य को लौटते हैं। जीजां के कहने पर, माताजी की सहमति से तब कमलास का यह गीत गाया गया-

लींबड़ी राणा राईजी रे देस
ओ फरी ने कटावो सीसोद्या लींबड़ी
लींबड़ी राणी मोरी नुं जाय,
जठे ओ जठे देवता रो वासो वसरयो
बदना री राणी बायर आवो,
थांणो ओ थांणो रूप बखाणे
माता सीस वागड़िया नारेळ,
चोटी ओ चोटी यो वासक वसरयो

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 अक्टूबर 2021

सम्पादकीय

सबसे सुन्दर देश हमारा

अपने मुंह मिया मिट्ठू बन तो सभी अपनी प्रशंसा कर आत्ममुग्ध होते हैं पर यदि दूसरे कुछ अच्छा कहें, वे जिनसे इस भूमि का कोई जमीनी जुड़ाव नहीं रहा हो तो बात सवा आना बनती है, अच्छा लगता है। आजादी के बाद अब ऐसा सुनते हैं, सोचते-समझते हैं, चिन्तन-मनन करते हैं तो अच्छा सुखद लगता है।

भारत के पुराने वैभव का गुणगान तो कइयों ने किया सुना है पर यह कल्पना नहीं थी कि वह पुराना स्वप्निल हुआ दौर फिर लौटेगा। जब से मोदी आये हैं, उन्होंने अनेक आयामों से, अनेकानेक नये कोणों से, नये गवाक्षों से, नये घोंसलों में वह नया प्रस्तुत किया है जो दिखता हुआ अकल्पनीय ही था।

यों भी भारत विचित्रताओं, अजूबों का देश है। इतने धर्म, सम्प्रदाय, संघ, संगठन, मान्यताएं, भाषाएं, बोलियां, संस्कार, सरोकार, समाज, परम्पराएं, धारणाएं, टोने-टोटके, नृत्य, उत्सव, अनुष्ठान लिए है कि कुछ कहते नहीं बनता। पूरा राष्ट्र अपने लिए नहीं, पहले अन्यों के लिए चिंतित रहता है। प्रकृति से जुड़े धरती आकाश पवन अग्नि वनस्पति सबमें जीव मानकर सबके देवों को नमन करता है। पूजा-प्रतिष्ठा करता है फिर अपना जीवन उनके भरोसे अर्पण-समर्पण कर देता है।

यहां का निवासी पहाड़ पूजता है। नदियां पूजता है। वृक्ष पूजता है। अपने बड़ेरों को नमन करता है। सबमें भगवान का अंश मानता है। सारे के सारे देव धरती पर आते हैं। आकाश में विचरण करते हैं। अदृश्य रहकर हमारी सहायता करते हैं। उनका आह्वान कर उन्हें अपनी काया में साक्षात् कर उनसे सवाल-जवाब करता है।

यहां हर दिन उत्सव है। पर्व है। जन्म महोत्सव है तो मृत्यु भी महोत्सव है। यहां कर्मवीर दानवीर धर्मवीर शूरवीर हैं तो तपस्वी संन्यासी भी हैं। कोई गुफाओं में, कन्दराओं में, पहाड़ों में, जंगलों में, मठों, मन्दिरों में तो कोई तीर्थों, धर्मस्थलों, महल-मालियों, झोंपड़ियों और झूंपों में योग, तपस्या, साधना, कीर्तन, भजन तथा सबद, वाणी कर रहे हैं।

यहां सत और मर्यादा में बंधे सीता-राम हुए तो अखण्ड प्रेम में पगे राधा-कृष्ण। चुपचाप गृहस्थ घर छोड़ विरागी बने गौतम बुद्ध हुए तो बेशुमार धन-दौलत में पगे सबकुछ न्यौछावर कर तीर्थंकर बने राजकुमार हुए। हनुमान जैसे स्वामीभक्त और भक्ति में सर्वस्व समर्पण दिये मीरांबाई हुए। न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य और दानवीर कर्ण हुए। सूर-तुलसी जैसे भक्त हुए तो कबीर जैसे फक्कड़। है कोई ऐसा अन्य देश!

चौपाल की बतरस में हास्य का कड़का

झील नगरी में संप्रति संस्थान द्वारा हास्य कवि डाड़मचंद 'डाड़म' लिखित पांच पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता लोकसंस्कृतिविज्ञ् डॉ. महेन्द्र भानावत ने की। मुख्य अतिथि युगधारा के संस्थापक डॉ. ज्योतिपुज थे। प्रारंभ में कवि डाड़मचंद 'डाड़म' ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि पिछले चार दशक से कविमंचों पर कविता पाठ करते महसूस हुआ कि जो कविताएं सर्वाधिक जनप्रिय बनीं उनका प्रकाशन किया जाना चाहिए। फलस्वरूप डाड़म रो डंको, डाड़म रो रस, डाड़म री लेणा, जैन कथा काव्य तथा मेवाड़ी रेप सांग का लोकार्पण हुआ। इस मौके पर कवि डाड़म ने काव्य पाठ भी किया।

लोकार्पण में कमलेश जैन, डॉ. ज्योतिपुंज, डॉ. भानावत तथा डाड़मचंद

अध्यक्ष डॉ. भानावत ने कहा कि डाड़मचंद की कविताओं में युगबोध की विषमताओं, रूढ़ियों तथा आडम्बरों का सचोट अनुरंजन है। कवि डाड़म जब मंचों पर आते हैं तो हास्य की बत्तीसी के माध्यम से श्रोताओं को रसभौर किये रहते हैं। उनका हास्य न तो पत्नीवाद के प्रवर्तक गोपालप्रसाद व्यास की तरह है और न ही काका हाथरसी की तरह अपितु चौपाल पर बैठे आमजनों के बतरस से उपजी अगजग की अनेक गपशप से उपजा ताजगी देता कड़का है। मुख्य अतिथि डॉ. ज्योतिपुंज ने कहा कि सृजन का सुख क्या होता है, यह शब्दों में बांधना मुश्किल है। सृजन भी ऐसा हो जो लोक के दुखदर्द पर पर्दा डालकर व्यक्ति को हंसने-हंसाने का मौका दे तो क्या कहने! कवि डाड़मचंद 'डाड़म' नैसर्गिक रूप से हंसने-हंसाने का हुनर अपने शब्दों-भावों तथा अभिव्यक्ति में बिखेरते आये हैं। मैं लगभग 40 वर्षों से उनके हास्य को पकाने और परोसने के हूनर से चिर परिचित हूं।

उल्लेखनीय है कि कवि डाड़म की पूर्व कृति 'डाड़म रा दाणा' व कैसेट 'डाड़म के दाने लगे हंसाने' खूब लोकप्रिय रही है। समारोह का संचालन कवि कमलेश जैन ने तथा धन्यवाद की रस्म युगान जैन ने अदा की। इस अवसर पर कवि परिवार के सरोज जैन, पल जैन तथा लाक्शीन जैन भी उपस्थित थे।

- डॉ. तुक्तक भानावत

'राजस्थान के लोकगीत' लोकार्पित

उदयपुर (वि.)। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक पन्नालाल मेघवाल द्वारा संपादित 'राजस्थान के लोकगीत' का लोकार्पण पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में शादी ब्याह, तीज त्यौहार, विवाहोत्सव आदि मांगलिक अवसरों पर लोकगीत प्रमुखता से गाए जाते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह परम्परा लुप्त होती जा रही है। ऐसे समय में श्री मेघवाल ने संकलन करके उत्कृष्ट कार्य किया है।

इंटैक उदयपुर चैप्टर के सह संयोजक गौरव सिंघवी ने बताया कि पुस्तक में देवी देवता के 22, जच्चा बच्चा के 21, हल्दी पीठी के 85, तीज-त्यौहार के 15, लोक संस्कारों के 127 कुल 270 लोकगीत सम्मिलित हैं। इस अवसर पर जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक कमलेश शर्मा, प्रकाश मेघवाल एवं सुनील व्यास उपस्थित थे।

सुसाहित्य पठन जरूरी

पुस्तकें जीवन में सबसे सुंदर और अनुपम उपहार हैं। उनका महत्त्व ना कभी कम हुआ ना होगा। ये विचार राजकुमार जैन 'राजन' ने कांकरोली में काव्यगोष्ठी मंच द्वारा उनके अभिनंदन के दौरान व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि कभी पैसे नहीं होने से मैं किताबें नहीं खरीद पाता था और आज मैं लाखों पुस्तकें नि:शुलक बांटकर साहित्य सेवा कर रहा हूं। पुस्तकें ज्ञान का भंडार हैं। मनुष्य के अनुभवों का संसार हैं। यदि हमें ज्ञान-विज्ञान की नई उपलब्धियों का आविष्कार करके जन-मन तक उन्हें पहुंचाना है तो किताबों को जीवन का अंग बनाना होगा। हमें हिन्दी भाषा और संस्कारों को संरक्षित करना तथा बालकों के दिलों में पठन-पाठन के प्रति रूचि पैदा करना होगा। राजन पिछले 17 वर्षों में भारत के विभिन्न राज्यों की संस्थाओं, विद्यालयों, विद्यार्थियों को नि:शुल्क दस लाख रूपये से भी अधिक मूल्य का साहित्य वितरित कर चुके हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार अफजल खां अफजल ने की। विशिष्ठ अतिथि शेख अब्दुल हमीद और सूर्यप्रकाश दीक्षित थे। संचालन हेमेंद्रसिंह चौहान ने किया। गोष्ठी में कमलेश जोशी, राजकुमार शर्मा, राहुल दीक्षित, शेख हनीफ रिजवी, प्रह्लाद टेलर, यशवंत शर्मा, योगेंद्र जीनगर, लवलेश शर्मा, जितेंद्र पालीवाल आदि कवि और साहित्यकार उपस्थित थे। **- सूर्यप्रकाश दीक्षित**

चार साहित्यकारों को धींग पुरस्कार

उदयपुर में पिछले दिनों युगधारा और डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान द्वारा हिम्मतसिंह उज्ज्वल और शिवदानसिंह जोलावास को कन्हैयालाल धींग राजस्थानी पुरस्कार एवं विजय मारू और महेन्द्र साहू को उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार प्रदान किये गये।

लाइफसेल इंटरनेशनल चैन्नई के अध्यक्ष श्रीश्रीमाल जैन ने कहा कि जो शुभ कार्य संभव हो वह करना चाहिये और जो असंभव प्रतीत हो, उसे भी करने का विश्वास रखना चाहिए।

डॉ. दिलीप धींग ने धींग पुरस्कारों की निरंतरता, महत्ता और विशिष्टता को रेखांकित किया। समारोह में प्रो. ललिता बी. जोगड़, डॉ. कुंदनलाल कोठारी, अशोक जैन, डॉ. कनक मादरेचा, उपेन्द्र अणु, डॉ. सुरेंद्रसिंह पोखरना, किरणबाला किरन, डॉ. करूणा दशोरा, राजेंद्रकुमार चतुर, सुरेशचंद्र धींग, रेखा जारोली, डॉ. ज्योतिपुंज के अलावा हिंदी व राजस्थानी के कई रचनाकार, शिक्षाविद् और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। समग्र साहित्यिक वातावरण के बीच प्रणत धींग की कविता उत्साहवर्धक रही। **- अतुल धींग**

डॉ. धर्मेन्द्र पारे को नानाजी देशमुख सम्मान

भोपाल (ह.सं.)। भोपाल की आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी के निदेशक डॉ. धर्मेन्द्र पारे को नानाजी देशमुख सम्मान प्रदान किया जाएगा। यह सम्मान डॉ. पारे को जनजातीय जीवन और संस्कृति पर केन्द्रित उनके समग्र लेखकीय अवदान पर दिया जायगा। दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड द्वारा वर्ष 2019 के इस सम्मान में डेढ़ लाख रूपये, प्रशस्तिपत्र तथा प्रतीक चिन्ह दिया जायगा। उल्लेखनीय है कि डॉ. पारे विगत 25 वर्षों से जनजातीय कला-संस्कृति एवं जीवनधर्मिता पर मनोयोगपूर्वक उच्चस्तरीय साधनामूलक कार्य करने में संलग्न हैं। शब्द रंजन की बधाई।

जोशी लघु उद्योग भारती के अध्यक्ष बने

उदयपुर (वि.)। लघु उद्योग भारती के चुनावों में वरिष्ठ उद्यमी मनोज जोशी अध्यक्ष, मार्बल व्यवसायी कपिल सुराणा महासचिव एवम मिनरल व्यवसायी राकेश नाहर को कोषाध्यक्ष चुना गया। उनके साथ महिला इकाई अध्यक्ष पद पर मीनाक्षी श्रीमाली चुनी गईं। प्रारंभ में विश्वकर्मा की पूजा चित्तौड़ प्रान्त अध्यक्ष योगेंद्र शर्मा, वीरेंद्र डांगी, राकेश वर्डिया, महेंद्र माण्डावत, मीनाक्षी श्रीमाली, रीना राठौड़ द्वारा की गई। मुख्य अतिथि योगेंद्र शर्मा ने लघु उद्योग भारती के गठन पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आज यह विश्व का सबसे बड़ा लघु एवं सूक्ष्म उद्यमियों का संगठन बन 25000 से भी ज्यादा सदस्य संख्या लिए है। निवर्तमान अध्यक्ष महेंद्र मांडावत तथा मीनाक्षी श्रीमाली ने अतिथियों का स्वागत किया। मनोज जोशी ने कहा कि वे उदयपुर क्षेत्र के लघु उद्यमियों की समस्याओं को प्रभावी तरह से उठाने एवं सांगठनिक शक्ति के बल पर उनका निराकरण कराने का प्रयास करेंगे। सभी औद्योगिक क्षेत्रों में लघु उद्योग भारती की इकाई का गठन किया जाएगा तथा नवीन इकाइयों के साथ उद्यमी सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। संचालन पिंकी माण्डावत ने किया।

माउंट कून पर पहुंची रूचिका जैन

उदयपुर (वि.)। 21 दिन का सफर, माइनस 30 डिग्री तापमान व 21000 फीट की ऊंचाई के कठिन डगर पर रूचिका जैन (28) ने बुलन्द हौंसले के दम पर लद्दाख के सबसे ऊंचे पर्वत नून-कून के माउंट कून की चढ़ाई पूरी की। यात्रा के दौरान उन्होंने बालिका शिक्षा जागरूकता के लिए कार्य किया। रूचिका ने बताया कि खड़ी चढ़ाई के साथ माइनस 30 डिग्री तापमान रहते ऑक्सीजन की कमी महसूस होने लगी लेकिन आगे बढ़ती गई और माउंट कून पर्वत पर तिरंगा फहराया। यात्रा पर लगभग नब्बे हजार का खर्च आया।

श्राद्ध में कन्याओं का संझ्या चितरावण

- डॉ. कहानी भानावत -

सांझी कुंवारी कन्याओं का अनुष्ठानमूलक लोकोत्सव है जो प्रतिवर्ष श्राद्ध पक्ष में मनाया जाता है। बालिकाएं प्रति संध्या घर के मुख्य द्वार के एक ओर हिंगलू मिट्टी की गोहली पर ताजे गोबर की आकृतियां बनाकर भांति-भांति के फूलों से सजाती हैं। ये आकृतियां सांझी कही जाती हैं। इस चितरावण में घर की महिलाएं भी बड़ा सहयोग करती हैं। दस ग्यारह दिन तक विभिन्न आकृतियां, तिथि के अनुसार भी बनाई जाती हैं फिर एक बड़ी आकृति बनाई जाती है जो कोट कहलाता है। यह कोट परकोटे के भीतर बना होता है। देश के कई अंचलों में सांझी का प्रभाव और प्रसार है अत: वहां की आंचलिक विशेषताएं भी सांझी चित्रण में प्रमुखता से घर कर गई हैं। ऐसी स्थिति में हर अंचल की सांझी उस अंचल विशेष की धरोहर और समृद्ध चिर्तकृति लगती है।

यह भी हुआ कि जिस अंचल-प्रांत के जिस लेखक ने सांझी पर लिखा उसने उसे अपने अंचल प्रांत की समृद्ध धरोहर कहना ही अधिक संगत समझा। ब्रजप्रदेश में जो सांझी सर्वाधिक रूप में प्रचलन में है वह मंदिरों में बननेवाली सांझी है जिसमें कृष्णलीला की विविध छवियां दर्शाई जाती हैं इसीलिए मंदिर के बाहर लोकजीवन में प्रचलित बालिकाओं की सांझी को भी भ्रमवश उसी से जोड़ दिया और उसमें भी कृष्णलीला को प्रमुखता दे दी जबकि इस सांझी में ऐसा कुछ नहीं मिलता।

बगड़ावत में आई कथा में लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने सबसे पहले सांझी के एक गीत 'खुड़-खुड रे म्हारा खोड्या जमाई थूं संझ्या ने लेवण आयो रे' से संझ्या का उद्भव मानते जो कथा उदघृत की वह इस प्रकार है-

सूर्योदय पूर्व बड़े सवेरे बूढ़े पुष्कर में नहाती हुई लीला सेवड़ी नामक ब्राह्मणी की निगाह ज्योंही घोड़े पर अपने हाथ में शेर का सिर लिए आते हरिजी पर पड़ी कि उसके गर्भ रह गया फलत: हरिजी को लीला सेवड़ी से विवाह करना पड़ा। इससे बाघजी नामक संतान हुई जिसका मुंह शेर का तथा धड़ मनुष्य का था। ये हरिजी अजमेर के राजा बीसलदेव के भाई मांडलजी के पुत्र थे।

बाघजी के होते ही राजा का बाग लहराने लग गया। सारे शहर के लोग उसे देखने उलट पड़े। राजा ने बाघजी को कालूराम नामक खोड्ये (लंगड़े) ब्राह्मण के सुपूर्द कर दिया। दोनों बाग में रहने लगे। एक दिन ब्राह्मण को शहर से लौटने में देर हो गई। बाघजी भूख से परेशान। ब्राह्मण जब लौटा तो बाघजी को गुस्से में देख डर गया कि कहीं उसे ही वह न खा ले।

बाघजी ने उसे बुलाया और देरी से आने का कारण पूछा। ब्राह्मण ने डरते-डरते कहा कि लग्न निकालने गया था सो देर हो गई। बाघजी ने कहा- 'मेरे लगन कब आयेंगे ? तू जानता हो तो मेरे भी निकाल दे।' ब्राह्मण ने मन में विचार किया कि इससे कौन शादी करेगा। कोई लड़की शादी कर भी लेगी तो इसे देखते ही डर मरेगी। पर उसे तो कुछ कहना ही था। फलत: उसने श्रावण

सांझी कोट

की तीज पर झूला डालने की सोची ताकि लड़कियां झूलने आयेंगी और उसके साथ बाघजी की शादी करवा दी जायेगी। उसने यह बात बाघजी को कहदी। बाघजी ने कहा- 'यदि ऐसा नहीं हुआ तो मैं तुम्हें खा जाऊंगा।'

श्रावण पर झूला डाला। लड़कियां झूलने आई। ब्राह्मण ने कहा- 'पहले बाघजी के फेरा लेती जाओ फिर जाकर झूला झूलो।' समझदार लड़कियों ने तो ऐसा नहीं किया और अपने घर चली गई पर जो नासमझ थीं उन्होंने यह स्वीकार कर लिया। छत्तीस ही जात की लड़कियां वहां आई और बाघजी के फेरा खाती गई और झूला झूलती गई।

इधर उनके मां-बाप परेशान हुए। लड़कियां बड़ी होगई पर उनके लग्न नहीं आते। आयें भी कैसे? वे तो बाघजी से जो भांवर ले चुकी थीं। तब समाज एकत्र हुआ और तय हुआ कि ऐसी सभी लड़कियों को एक बड़े बाड़े में इकट्ठी कर उन्हें चरखा दे दिया जाय

केले के पत्तों की सांझी बनाता परिवार

और एक बुढ़िया पानी पिलाने के लिए रखदी जाय और उसे कह दिया जाय कि लड़कियां आपस में जो कुछ बात करें उसका ध्यान रखे। यही किया गया।

लड़कियां आपस में बात करें- 'अपनी हमउम्र की कइयों के तो बालबच्चे भी होगये और अभी तक अपनी शादी का पता नहीं।' एक ने कहा- 'मां बाप तो बिचारे शादी कराने के लिए कभी से तैयार हैं पर लग्न ही नहीं आये तो वे भी क्या करें?' दूसरी ने कहा- 'लग्न कहां से निकलेंगे, अपन तो बाघजी के साथ पहले ही विवाह कर चुकी हैं।' इस पर सब आपस में एक दूसरी को 'तू ही बाघल्ये की लुगाई, तू ही बाघल्ये की लुगाई' कहकर हंसी मसखरी करने लगी।

डोकरी ध्यानपूर्वक यह सब सुन रही थी। उसने सारी बात समाज को कहदी। समाज उन सभी लड़कियों को राजदरबार में ले गया और राजा से कहा- 'महाराज! इनको बाघजी ब्याह चुका है। किसी के लग्न नहीं आ रहे हैं। आप बाघजी को बुलाकर समझाओ।' राजा ने बाघजी को बुलाया। बाघजी ने कहा, 'मैंने इनके साथ फेरे तो खाये हैं पर इतनी का मैं क्या करूंगा? अधिक से अधिक जितनी मेरी बाथ में आयेंगी उतनी मैं रख सकूंगा।' बाघजी ने यह कहकर बाथ भरी। उसमें कुल तेरह आई। शेष जो बाहर रह गईं उन्होंने नाते (पुनर्विवाह) कर लिए। कहते हैं, पुनर्विवाह की यह प्रथा तब से ही प्रारंभ हुई।

इन तेरह में से बारह तो ऊंची जाति की थीं और एक जाति की बलायन थी जिसका नाम संझ्या था। बाघजी उन्हें लेकर बाग में आए। बाग में आकर खोड्या बोला कि मैंने आपके लगन निकाले, फेरे कराये तो मुझे भी तो कोई लड़की मिलनी चाहिये। बाघजी ने उन सभी में से जो भी सबसे रूपवती हो, उसे लेने को कह दिया। उनमें सबसे सुंदर संज्या थी। वह उसी को लेकर घर चला गया।

डॉ. श्याम परमार ने एकबार एक पोस्टकार्ड में डॉ. भानावत को लिखा- ब्रज के एक गीत में सजलदे का नाम आता है जो सांजा से विवाह कर लेती है अत: ब्रज में सांजी के साथ सांजा भी पूजा जाता है। उन्होंने सजलदे नाम को राजस्थान में लोकप्रिय रूपलदे, आभलदे, मालदे, वीरमदे जैसे नामों की अनुरूपता के साथ सांझी का मूल संबंध राजस्थान से होने का विश्वास भरा अनुमान जताया था।

घूमन्तु जातियों द्वारा इसका प्रचलन राजस्थान मालवा ब्रज आदि में हुआ किंतु अधिक संभव है, इसका मूल उद्गम अजमेर सांगानेर से ही हुआ हो। एक गीत भी है जिसमें कहा गया है- 'संज्याबाई रो सासरो बड़ी अजमेर, परण पधार्‌या सांगानेर।'

लोक की संपदा आंचलिक शोध से ही अधिक अनुप्राणित होती है। उसका अध्ययन लोकतत्वों की आधारशिला लिए होना चाहिए। इसमें स्थानीय रंगबोध, आंचलिक परिवेश, रंजन अनुरंजन, हंसी दिल्लगी,

जल सांझी बनाता कलाकार

लोकजीवन के सरोकार, सांस्कृतिक उत्स, जीवनेच्छाओं तथा निज भाषा बोली के सहज स्फुटन की अंत:श्चेतनाओं के इन्द्रधनुषी सहकारों से जो आयाम उद्घाटित होते हैं वे ही लोकतत्व को रूपायित करते हैं।

सांझी के अंतिम दिनों में बननेवाला संझ्या कोट पूरा गढ़ ही होता है जिसके चारों ओर मजबूत परकोटा बनाया जाता है। कोट के बाहर मुख्य द्वार के दोनों ओर जाड़ी जोधा, पतली पेमा बड़े आकर्षक रूप में मकई, ज्वार, लालें, चीणें, रूपहली, सुनहरी कोर, चिरमू, टीलड़ियां आदि से सजाई जाती हैं। उन्हीं के आसपास दूध दही की जावणी (माटी का बर्तन) लिए गुजरणी, झाडू लिए भंगन, ढोल के रूप में मकई का डूंडा लिए ढोली, सिर पर फूलों की छबड़ी लिए मालिन, पानी के घड़े लिए पनिहारिन तथा खापर्‌या चोर बनाए जाते हैं। खापर्‌या उल्टा, सिर नीचे और पांव ऊपर, बनाया जाता है।

कहना नहीं होगा कि निर्विवाद रूप से सांझी का उद्भव एवं विकास राजस्थान में हुआ। यहीं से मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र आदि प्रांतों में विविध नाम, रूप, स्वरूप में लमछराती हुई नेपाल तक इसने अपनी पहुंच दी। राजस्थान में भी मेवाड़ में इसका सर्वाधिक प्रसार है। इधर इसका प्रचलन सभी जातियों में, छत्तीस कौम में परिव्याप्त है। सर्वाधिक रंगीन और आकर्षक बननेवाली सांझी भी मेवाड़ की ही है। सांझी के अंकन भी सर्वाधिक मेवाड़ में ही देखने को मिलते हैं। फूलों की विविधता, सज्जा का आकर्षण, गीतों की बहुलता, बालिकाओं का उत्साह और उन्हें सहयोग देने में उनकी बहिनों तथा माताओं का सहयोग भी उतना ही हरख लिए रहता है।

आंचलिक प्रभाव की दृष्टि से मेवाड़ी बोली तथा यहां का ख्यातनाम पहनावा, संस्कार और जीवनधर्म का सांझी पर बड़ा प्रभाव है। सांझी विषयक सारे अंकन भी मेवाड़ के जनजीवन से जुड़े अंकन हैं। ये सभी सांझी अथवा संज्या, संझ्या नाम से ही जाने जाते हैं। फूलों से अधिक सुंदर और कमनीय कोई नारी नहीं होती। उसकी उपमा, उसके श्रृंगार सबके सब फूलों से संदर्भित होते हैं इसीलिए सांझी में भी फूलों का ही प्राबल्य, माधुर्य, उपादान, रंगावली, साज सजावट, घर आंगन, प्रतीक परिवेश और रचाव है। सब सांझी में है और सब में सांझी है। फूलों का हर सिंगार सांझी है तो सांझी के सारे सिंगार फूलों में समाविष्ट हैं। एक सांझी को लेकर जीवन की समग्रता का, पूर्णता का, पावनता का कितना विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

श्राद्ध पक्ष में ही पुष्टिमार्गी मंदिरों में विविध प्रकार की सांझी का प्रचलन है। इसके अनुसार मुख्यत: जल की तरह पर झिलमिल सांझी, नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर के विशाल कमलचौक में केले के पत्तों की सांझी उल्लेखनीय है। बाघजी का समय बारहवीं शताब्दी का है। मैंने स्वयं ने चित्रकला विभाग से 1995 में राजस्थान की सांझीकला पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. दीपिका माली ने सन् 2019 के अक्टूबर में उदयपुर के शिल्पग्राम में दीवाल पर सबसे बड़ी सांझी बनाकर गिनीज बुक में वर्ल्ड रेकार्ड दर्ज कराया।

बाजार / समाचार

कोटक ने होम लोन की ब्याज दरें घटाई

उदयपुर (वि.)। भारत में त्यौहारी मौसम की शुरुआत हो चुकी है और उदयपुर में अपने ग्राहकों को इन त्यौहारों का तोहफा देने के लिए कोटक महिन्द्रा बैंक (केएमबीएल) ने एक बार फिर होम लोन दरें घटाई हैं और इन्हें 15 बेसिस पॉइंट्स कम करके होम लोन दर को 6.65 प्रतिशत सालाना से 6.50 प्रतिशत सालाना कर दिया है। इस तरह अब कोटक होम लोन की ब्याज दरें 6.50 प्रतिशत सालाना से शुरु होती हैं जो उदयपुर शहर में घर खरीदने वालों के लिए सबसे अच्छी मूल्य ऑफर होंगी। ये दरें सीमित अवधि 8 नवंबर, 2021 तक लागू रहेंगी। किसी को नया होम लोन लेना हो या किसी और बैंक से चल रहा लोन ट्रांस्फर करवाना हो, दोनों ही मामलों में ब्याज दरें 6.50 प्रतिशत सालाना से आरंभ होती हैं। यह विशेष दर सभी ऋण राशियों के लिए उपलब्ध हैं और कर्ज़ लेने वाले के क्रेडिट प्रोफाइल से जुड़ी होंगी। कोटक महिन्द्रा बैंक के प्रेसिडेंट-कंज़्यूमर असैट्स, अम्बुज चांदना ने कहा कि हर कोई अपना खुद का घर बनाने का सपना देखता है और त्यौहारों के इस मौसम में हम उनका यह सपना सच करने में मदद देकर उनकी खुशियों में इज़ाफा करना चाहते हैं।

सिएट का पंक्चर सेफ टायर लॉन्च

उदयपुर (वि.)। सिएट टायर्स ने राजस्थान में मोटरसाइकिलों के लिए अपने नए पंक्चर सेफ टायर लॉन्च करने की घोषणा की। सएट टायर्स लि. के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर अमित तोलानी ने कहा कि ट्यूबलेस टायरों की यह नई रेंज उपभोक्ताओं को एक ऐसी तकनीक पेश करेगी, जो टायर पंक्चर होने की सूरत में भी परेशानीमुक्त सुरक्षित सवारी करने के लिए हवा का दबाव घटने से रोकेगी। ये टायर सभी दक्षिणी राज्यों- तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और केरल में पहले से ही उपलब्ध हैं। इन्हें गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और गोवा राज्यों में भी लॉन्च किया जा चुका है। पंचर सेफ रेंज को पंक्चर के बिंदु पर टायर से हवा निकलने से रोकने हेतु डिजाइन किया गया है। यह खूबी सिएट द्वारा इन-हाउस विकसित और पेटेंट की जा चुकी सीलैंट तकनीक की बदौलत पैदा हुई है, जो पंक्चर को सील कर देती है, जिससे यह रेंज वाकई एक सेल्फ-हीलिंग टायर बन गई है। यह टायर एक अनोखी बॉक्स पैकेजिंग में भी है और इसका भी पेटेंट कराया जा चुका है।

आकाश इंस्टीट्यूट के तीन छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर (वि.)। आकाश इंस्टीट्यूट के उदयपुर ब्रांच से तीन छात्रों ने प्रतिष्ठित जॉइंट एंट्रेंस एग्जामिनेशन (जेईई) मेंस 2021 के समेकित परिणाम में 96 प्रतिशत और उससे अधिक अंक हासिल किए हैं। आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लि. (एईएसएल) के मैनेजिंग डायरेक्टर आकाश चौधरी ने कहा कि अरिहंत जैन (99.28 पर्सेंटाइल), लोचन जैन (96.69 पर्सेंटाइल) और हार्दिक पारख (96.49 पर्सेंटाइल) ने 96 पर्सेंटाइल और उससे अधिक अंक हासिल किए हैं। दुनिया की सबसे कठिन प्रवेश परीक्षा मानी जाने वाली आईआईटी जेईई को क्रैक करने के लिए छात्रों ने आकाश इंस्टीट्यूट में दो साल के क्लासरूम प्रोग्राम में दाखिला लिया। उन्होंने जेईई में टॉप पर्सेंटाइल की उच्च सूची में अपने प्रवेश का श्रेय अवधारणाओं को समझने के उनके प्रयासों और उनके सीखने के कार्यक्रम के सख्त पालन को दिया।

फ्लिपकार्ट ने सस्टेनेबल वैल्यू चेन को दी मजबूती

उदयपुर (वि.)। फ्लिपकार्ट ने त्योहारी सीज़न और बिग बिलियन डेज़ को ध्यान में रखकर अपने डिलीवरी फ्लीट में 2000 से ज्यादा इलैक्ट्रिक वाहन शामिल किए हैं। कंपनी द्वारा इस साल जुलाई से अपनी सप्लाई चेन से सिंगल-यूज़ प्लॉस्टिक को हटाने के बाद से फ्लिपकार्ट के 75 प्रतिशत से ज्यादा विक्रेताओं के शिपमेंट्स अब सस्टेनेबल पैकेजिंग के जरिए भेजे जा रहे हैं जो जुलाई 2020 की तुलना में 20 गुना बढ़ोतरी लिए है और इसमें भारतभर की 70 से ज्यादा फैसिलिटीज़ शामिल है।

महेश प्रताप सिंह, हैड - सस्टेनेबिलिटी एवं सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी, फ्लिपकार्ट ने कहा कि त्योहारी सीज़न सभी हितधारकों के लिए मूल्य सृजन तथा प्रगति करने का समय होता है और हम अपने ग्राहकों के साथ किए सस्टेनेबल फेस्टिव सीज़न के वायदे को साकार करते हुए गर्व महसूस कर रहे हैं।

पंचायत समिति कोटड़ा को आईएसओ प्रमाण पत्र

उदयपुर (वि.)। जिले की पंचायत समिति कोटड़ा को गुणवत्ता प्रबंधन एवं पर्यावरण प्रबंधन के लिए आईएसओ 9001 : 2015 तथा पर्यावरण प्रबंधन सिस्टम आईएसओ 14001 : 2015 का प्रमाण पत्र आगामी 15 अगस्त 2023 तक के लिए दिया गया है। यह प्रमाणपत्र जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी गोविंदसिंह राणावत ने कोटड़ा पंचायत समिति की प्रधान श्रीमती सुगना देवी खैर एवं विकास अधिकारी कोटड़ा धनपतसिंह राव को सौंपा। विकास अधिकारी ने बताया कि डोर टू डोर कचरा संग्रहण, शिकायत निवारण, सीसीटीवी कैमरे, कम्प्यूटर कक्ष, वीसी रूम, विकास कार्य, वाट्सअप ग्रुप, मोबाइल एप, गुणवत्तापूर्वक सेवाएं, कोविड प्रबंधन, कुपोषण निवारण, सुपोषण वाहिकाएं, ट्राइबल ट्यूरिज्म गाइड प्रशिक्षण, नरेगा, राजीविका के तहत विभिन्न विकास कार्यों के साथ जनराहत के कार्यों एवं अत्याधुनिक सुविधाओं के लिए यह सम्मान मिला है।

दिग्गज फुटबॉलरों ने किया जिंक फुटबॉल अकादमी का दौरा

उदयपुर (वि.)। वेदांता हिंदुस्तान जिंक द्वारा शुरू किए गए जिंक फुटबॉल के सलाहकार बोर्ड के सदस्य - भारतीय फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान रेनेडी सिंह, भारत की सबसे प्रसिद्ध महिला फुटबॉलर ओइनम बेमबेम देवी और अनुभवी फुटबॉल प्रशासक शाजी प्रभाकरन ने वेदांता स्पोर्ट्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल के साथ जावर स्थित जिंक फुटबॉल अकादमी का दौरा किया।

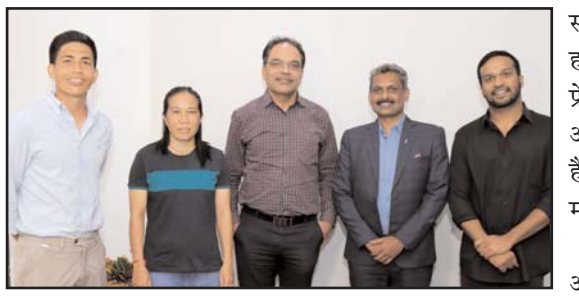

दौरे के दौरान तीन दिग्गजों ने कहा कि वे जिंक फुटबॉल द्वारा शुरू किए गए देश के पहले 'तकनीक आधारित फुटबॉल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम' से काफी प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान में बहुत अच्छी युवा फुटबॉल प्रतिभाएं हैं जो न केवल राज्य के लिए ख्याति प्राप्त कर सकती हैं बल्कि उच्च तर पर सफल भी हो सकती हैं।

वेदांता स्पोर्ट्स के अध्यक्ष अनन्य अग्रवाल ने कहा कि मैं भारतीय फुटबॉल के तीन आइकनों का स्वागत करते हुए सम्मानित महसूस कर रहा हूं। हमने लंबे समय से उन्हें एक प्रेरणा के रूप में देखा है और अब यह हमारे लिए गर्व की बात है कि वे हमारे रोडमैप पर हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कहा कि सलाहकार के रूप में रेनेडी, बेमबेम और शाजी के होने पर हमें खुशी है। हमारी पहल के लिए उनके अनुभवों, प्रतिक्रिया पर बात करना शानदार अनुभव था।

इन्दिरा आईवीएफ के 101वें सेंटर का उद्घाटन

उदयपुर (वि.)। इन्दिरा आईवीएफ के 101वें हॉस्पिटल का बिहार के गया में वर्चुअल प्लेटफार्म पर मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी ने उद्घाटन किया। विशिष्ट अतिथि राजस्थान सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा, इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, इन्दिरा मुर्डिया, सीईओ डॉ. क्षितिज मुर्डिया, डायरेक्टर नितिज मुर्डिया उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा कि मेरे लिए यह गर्व का विषय है कि वर्ष 2011 में उदयपुर में इन्दिरा आईवीएफ के पहले हॉस्पिटल का और अब 101वें हॉस्पिटल का उद्घाटन करने का अवसर मुझे मिला। दस साल पुरानी यादें ताजा हो गयी। नि:संतानता से प्रभावित दम्पतियों के दर्द को समझ कर उन्हें रियायती दरों में उच्चस्तरीय उपचार उपलब्ध करवाने का जो बीड़ा इन्दिरा आईवीएफ ने उठाया वह एक मिसाल है।

डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि इन्दिरा आईवीएफ ने इन्दिरा आईवीएफ प्रबंधन से कहा कि नि:संतानता और इसके उपचार से जुड़े किसी कार्य में सरकार से किसी तरह की मदद की आवश्यकता हो तो वे सहयोग के लिए तैयार हैं।

बढ़ी हुई प्रोस्टेट से हो सकती हैं पेशाब की समस्याएं

उदयपुर (वि.)। बीपीएच या बेनाईन प्रोस्टेटिक हाइपरप्लासिया बढ़ी हुई प्रोस्टेट का चिकित्सीय नाम है। यह उम्र बढ़ने के साथ हार्मोनल परिवर्तनों के कारण होता है। बीपीएच सौम्य होता है। इसका मतलब है कि यह कैंसर नहीं है। यह कैंसर का कारण भी नहीं हैं। हालांकि, बीपीएच और कैंसर एक साथ हो सकते हैं। बीपीएच के लक्षण हर व्यक्ति में अलग हो सकते हैं और यह बढ़ने के साथ लक्षण अलग-अलग भी हो सकते हैं। बढ़ी हुई प्रोस्टेट से जुड़ी परेशानियां या जटिलताएं अनेक समस्याएं उत्पन्न कर सकती हैं, जो समय के साथ विकसित होती हैं। बीपीएच का जोखिम तीन चीजों से बढ़ जाता है जिनमें बढ़ती उम्र, परिवार में इतिहास और मेडिकल स्थिति शोध से पता चलता है कि मोटापा बीपीएच के बढ़ने में मददगार हो सकती हैं।

डॉ. मनीष भट्ट, कंसलटेंट यूरोलॉजिस्ट, जीबीएच जनरल हॉस्पिटल ने कहा कि प्रोस्टेट उम्र के साथ वृद्धि के दो मुख्य चरणों से गुजरता है। पहला चरण यौवनावस्था की शुरुआत में होता है, जब प्रोस्टेट का आकार बढ़कर दोगुना हो जाता है। वृद्धि का दूसरा चरण लगभग 25 साल की उम्र से शुरू होता है और आजीवन चलता रहता है। कुछ मामलों में दवाई से काम चल जाता है और कभी-कभी मिनिमली इन्वेसिव प्रक्रिया की जरूरत होती है। कभी-कभी मिश्रित इलाज श्रेष्ठ रहता है। ज्यादा गंभीर मामलों में प्रोस्टेट बढ़ने से मूत्र रुक सकती है, जिससे और ज्यादा गंभीर समस्याएं, जैसे किडनी फेल हो सकती है। इसका इलाज फौरन करना पड़ता है। इसलिए, यदि कोई भी लक्षण दिखने पर उसका निदान कराएं।

डॉ. माथुर का शोधपत्र राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के कम्युनिटी मेडिसिन विभाग की सह आचार्य डॉ. मेधा माथुर के कोविड वैक्सीन पर लिखे गए शोध पत्र को इंडियन पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन कांफ्रेंस 2021 में राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। शोध में भारतीय कोविड वैक्सीन को सुरक्षित, उपयोगी एवं प्रभावी पाया गया। कम्युनिटी मेडिसिन के विभाध्यक्ष डॉ. मुकुल दीक्षित ने इस शोध को वैक्सीन के क्षेत्र में बहुमूल्य बताते हुए शोधकर्ताओं को बधाई दी।

जटिल सर्जरी से नवजात को मिला नया जीवन

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडीकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने नवजात की जटिल सर्जरी कर नया जीवन दिया है। चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों मालरोटेशन ऑफ इंटेस्टाइन नामक बीमारी से पीड़ित चित्तौड़ निवासी एक नवजात को पिम्स में उपचार के लिए लाया गया। इस बीमारी में आंतों में विकार होता है। बच्चा दूध पीने में असमर्थ होता है तथा आंत पेट में घूम कर काली पड़ जाती है।

पीड़ियाट्रिक सर्जन डॉ. अतुल मिश्रा ने बताया कि नवजात की बड़ी समस्या यह थी कि इसका एक बड़ा ऑपरेशन दूसरे अस्पताल में हो चुका था और दुर्भाग्यवश दोबारा ऑपरेशन की जरूरत थी। बच्चा भयानक संक्रमण से पीड़ित था। लगभग 3 घंटे चले इस ऑपरेशन में आंतों को दोबारा जोड़ा गया व पेट की सफाई की गई। तमाम खतरों, संक्रमण व कमजोरी के बावजूद

बच्चे ने तेजी से स्वास्थ्य लाभ लिया। बच्चा अब पूर्णत: स्वस्थ है। बच्चे का ईलाज सरकारी योजनाओं के तहत नि:शुल्क हुआ। ऑपरेशन में निश्चेतना विभाग की डॉ. कमलेश, डॉ पूजा, डॉ. वीनस, पीड़ियाट्रिक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विवेक पाराशर, डॉ. राहुल खत्री, स्टाफ अश्मति, अरुण, निर्मला, उदय व टीम का सहयोग रहा।

उपाध्याय मूलमुनिजी नहीं रहे

श्रमण संघ के उपाध्याय मूलमुनिजी का 26 सितम्बर को कोटा में संथारा-तप के साथ देवलोकगमन हो गया। वे आत्म प्रतिष्ठा से दूर रहकर साधना करने वाले मुनिराज थे। प्राकृत, संस्कृत, हिंदी, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं के जानकार थे। उन्होंने चार हजार से अधिक आयम्बिल तप किये। करीब दो दर्जन कृतियां उनकी साहित्यिक प्रतिभा का प्रमाण हैं। मात्र 17 वर्ष की तरुणाई में उन्होंने जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज से दीक्षा ग्रहण की। उनकी साधुता समता, सरलता और समदर्शिता से अलंकृत थी। **-डॉ. दिलीप धींग**

विनोद भानावत का निधन

उदयपुर (वि.)। मूलत: कानोड़ निवासी भेरुलाल भानावत के सुपुत्र विनोद भानावत का 27 सितम्बर को आकस्मिक निधन हो गया। पचास वर्षीय विनोद सर्किट हाऊस डूंगरपुर में सेवारत थे। स्वभाव से मिलनसार, मृदुभाषी तथा सेवाभावी होने के कारण विभाग में सुचर्चित रहे। उनकी श्रद्धांजलि सभा में उनसे जुड़े कई मित्र, परिजन और समाजसेवी शामिल थे।

डॉ. भानावत 'मेवाड़ गौरव सम्मान' से विभूषित

लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को 25 सितंबर को 'मेवाड़ गौरव सम्मान' से विभूषित किया गया। फस्ट इंडिया न्यूज चैनल, जयपुर द्वारा होटल रेडीशन ब्लू में आयोजित समारोह में अध्यक्ष पद से बोलते हुए नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि अच्छाई की लाईन बढ़ाने से बुराई अपनेआप खत्म हो जायेगी। उन्होंने हाडीरानी, पन्नाधाय और भामाशाह का जिक्र करते कहा कि मेवाड़ का यागदान पूरे विश्व में अतुलनीय है अत: इतिहास के पन्नों को भी आगे लाना चाहिये।

समारोह में डॉ. महेन्द्र भानावत को नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया, उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, चित्तौड़ सांसद सी.पी. जोशी, फस्ट इंडिया चैनल के सीएमडी जगदीशचन्द्र, ऑल इंडिया कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य रघुवीरसिंह मीणा, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, उदयपुर रेंज के आईजी हिंगलाज दान तथा ऑल इंडिया आदिवासी कांग्रेस के नेशनल कॉर्डिनेटर विवेक कटारा ने शॉल, उपरना और स्मृति चिन्ह भेंट कर 'मेवाड़ गौरव सम्मान' से सम्मानित किया।

साहित्य के अलावा डॉ. भानावत के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, जनसेवा, झील संरक्षण, सूक्ष्मतम स्वर्ण निर्मिति, प्रशासनिक उत्कृष्ट सेवक तथा कोरोना वीर जैसे विविध क्षेत्रों के निष्णात प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, कपिल पालीवाल, डॉ. जे. के. छापरवाल, इकबाल सक्का, मांगीलाल सुथार, रोहित जोशी, तेजशंकर पालीवाल, जितेन्द्रसिंह राठौड़, डॉ. जगदीश विश्नोई, डॉ. हनुवंतसिंह राठौड़, जसवंत सुमन, अमन अग्रवाल, मधुरम खत्री, डॉ. शीतल मीणा, चंद्रशेखर जोशी, चंद्रगुप्तसिंह चौहान, राजीव जोशी, डॉ. अरूण गुप्ता, डॉ. कपिल भार्गव, अशोक कुमार, शैलेन्द्रसिंह का सम्मान किया गया। अतिथियों का स्वागत फस्ट इंडिया न्यूज उदयपुर के ब्यूरोचीफ डॉ. रवि शर्मा ने किया।

समारोह में राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, पन्नालाल मेघवाल, डॉ. कमलेश शर्मा, डॉ. कुंजन आचार्य, गिरीश जोशी, डॉ. पृथ्वीराजसिंह चौहान, डॉ. दिनेश खराड़ी, सरदारसिंह होड़ा, डॉ. रमेश जोशी, डॉ. बीएल बामनिया, पंकज शर्मा, फिरोज अहमद शेख, शंकर चंदेल, श्रीकृष्ण मोहता, छोगालाल भोई, राकेश जैन, शेरसिंह चौहान, अशोक सिंघवी, हिम्मतसिंह झाला, अजयकुमार आचार्य, संजय व्यास, अल्पेश लोढ़ा उपस्थित थे।

- डॉ. तुक्तक भानावत

एचडीएफसी बैंक द्वारा चार लाख से अधिक कार्ड जारी

उदयपुर (वि.)। एचडीएफसी बैंक ने प्रतिबंध हटने के बाद से अब तक 4 लाख से अधिक क्रेडिट कार्ड जारी करने का नया रिकॉर्ड बनाया है। बैंक द्वारा यह रिकॉर्ड 21 सितंबर को ही बना लिया गया था और उसके बाद भी बैंक ने लगातार इस सेक्टर में आक्रामक तौर पर ग्रोथ को दर्ज किया है। पराग राव, ग्रुप हेड-पेमेंट्स, कंज्यूमर फाइनेंस, डिजिटल बैंकिंग एंड आईटी, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि बैंक क्रेडिट कार्ड सेगमेंट में कई सारे मजबूत उत्पादों और साझेदारियों के साथ अपने क्रेडिट कार्ड पोर्टफोलियो को नए सिरे से मजबूत बना रहा है और इसमें नए को-क्रेडिट काड्र्स को लॉन्च कर रहा है। बैंक ने 3 कार्ड फिर से री-लॉन्च करने की भी घोषणा की। बैंक के मिलेनिया, मनीबैक+ और फ्रीडम कार्डों को कई नए फीचर्स और लाभों को जोड़कर, ग्राहकों के हाथों में अधिक शक्ति प्रदान करने के लिए नए सिरे से तैयार किया गया है। बैंक द्वारा कई नए कार्ड प्रोडक्ट्स को क्रिएट और को-क्रिएटिंग प्रत्येक ग्राहक वर्ग को आगे बढ़ाने की बैंक की रणनीति का हिस्सा है; फिर चाहे वे कार्ड शहरी क्षेत्रों के लिए हो या ग्रामीण क्षेत्रों के लिए।

पंकजकुमार शर्मा राजस्थान मेडिकल रिलीफ सोसायटी के सदस्य मनोनीत

उदयपुर (वि.)। पंकजकुमार शर्मा एवं विनोद पानेरी को राजस्थान सरकार द्वारा मेडिकल कॉलेज, उदयपुर के सुपरस्पेशलिटी ब्लॉक में संचालित राजस्थान मेडिकल रिलीफ सोसायटी के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया है।

गृहदेव पूरवजों की स्मृति.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

अर्थात् - राणा राईजी के देश फैली नीमड़ी कटाओ। राणी नींबड़ी कटाई नहीं जा सकती। वहां देवता का निवास है। बदना की राणी बाहर आकर अपने रूप का बखान करो। माता का सीस वागड़िये नारियल जैसा, चोटी जैसे वासुकि नाग, ललवट (ललाट) पर चांद उदित, बालों की मींडियां जैसे कुंवासिया (उदित) चांद, आंख आम की डाल, भुंवारा (भांपन) भ्रमर भ्रमण करते, दांत दाड़िम के बीज, जीभ कमल की पंखुड़ी, कण्ठ कोयल की राग, हिवड़ा (हृदय) हंस जैसा, हाथ चंपे की डाल, अंगुलियां मूंफली जैसी, पेट पोयर (पतला) पान के पत्ते जैसा, कमर केर की कमड़ी, जांघ देवल (केल) का थंभा, पींड्यां बेलन, एड़ियां सठवा सूंठ, धड़ हंस के सांचे में सुनार ने तैयार किया है।

माता बोली- 'सेवग (सेवाकारी) मुझे सुनार ने नहीं रघुनाथ ने रूप दिया है और मेरी माता ने जन्म दिया।' सेवाकारी (गानेवाली) बोली, 'घोड़े पर पलाण डाल परिवार के मुखिये का नाम लेकर देवता को दूर तक पहुंचाओ। मोगरे मरवे के फूलों में वे निवास करें। सरवर (सरोवर) जाकर हाथ-मुंह धोओ।' देवता के रूप-सौंदर्य की ऐसी उपमाएं बड़ी ही अनुपम हैं जो महिलाओं की सौंदर्य-दृष्टि तथा नव्य-भव्य परिकल्पना का अन्यतम उदाहरण है। देवता के प्रस्थान के बाद रात्रिजागरण की समाप्ति वाला कमलास गीत गाकर थोड़े रास्ते पानी का छींटा दिया जाता है। गीत है-

नानीसी तराई में नीर घणो ए मोरी सइयां
जठे ओ बाराओ पूरवज सांपड़े
सांपड्यां सूंपड्यां पूरवजां ने वीजो रे कमलास मोरी सइयां
तराई रो पाणी सइयां अंत घणो
नानीसी पिंगाणी (नारियल के ऊपर की खोल, काचली) में कंकू घणो ए....
नाना सा कंड्या मांय कपड़ा घणा ए....
पैर्‌या ओढ्या पूरवजां ने वीजो....
नाना सा डाबा में गेणला घणा ए....
नानी सी तोलड़ी (हंडिया) में लापसी घणी....
जीम्यां चूंट्या पूरवजां ने वीजो....
तोलड़ी री लापसी में अंतघणो....
सरवर जाइने चरूकर्‌या (हाथ धोये) वासो ने वसजो मरवे मोगरे।

दूसरे दिन सुबह धूप-ध्यान किया गया। नुगती-पूड़ी का भोजन बनाया गया। महिलाओं ने रातिजगे के गीत प्रारम्भ किये कि इतने में बावजी का पधारना हुआ। यह पदार्पण बड़ा आक्रोश लिये था। सारी धूप बिखेर दी। गेहूं के आखे कण-कण के कर दिये। खूब कोप किया। जीजां ने बड़ी हिम्मत रखी। कहा- 'बावजी इतना कोप मत करो। गोड़ला (माताजी) का शरीर बूढ़ा है। जो गलती हो फरमावो और माफ करो।' ऐसा कोप देख हम सब रोने लग गये।

मैंने नई धूप तैयार करवाई। भाई साहब की दी धूप बावजी ने स्वीकार नहीं की। जीजां ने पूछा तो बोले- 'यह घर में बड़ा है पर समझता ही नहीं है। मूरत बनवाकर लाया जिसे देखी तक नहीं।' जीजां ने मूरत देखी तो देवी की मूरत निकली। देवी खप्पर लिए हुए और पीछे सर्प बना दिया। मूरत होनी चाहिए थी पवन की। पवन के साथ सर्प की। बावजी पवन तथा सरप दोनों जूण में हैं।

बावजी पहले भी कई बार कोप कर चुके थे किन्तु ऐसा कोप कभी नहीं देखा गया। जीजां ने कहा- 'बावजी अपने भले हैं सो गलती बता दी। नहीं तो रातिजगा भी स्वीकार नहीं करते और जो जीमण बना उसे भी कण-कण का बिखेर देते तब रात तो अलग से फिर जगानी पड़ती ही, अभी जीमण दूसरा बनाना पड़ता, नहीं तो जीमने आने वालों को क्या खिलाते।'

हमने जब कानोड़ का पुश्तैनी मकान बेच दिया तो माताजी ने कहा कि बावजी को कानोड़ से नूतकर उदयपुर थापना कर देनी चाहिए। तब मैं व भाभीजी (डॉ. शांता भानावत) कानोड़ गये और नीचे वाले पक्के ओवरे में जहां कोने में सवा हाथ सम चौरस जगह छोड़कर चौंतरी (चबूतरी) बनी हुई थी, वहां हाथ जोड़कर विनती की, 'कानोड़ की यह जगह बेच दी है अत: आपको हम लेने आये हैं। आप पधारने की तैयारी कर लेना। हम दस बजे की बस से जायेंगे तब आपको हमारे साथ पधारना है।' बावजी वाले इस ओवरे में कभी कोई जापा नहीं हुआ। मौत-मरण पर कोई बैठक नहीं मंडी। माहवारी के दिनों में कोई औरत नहीं गई। सदैव इसकी पवित्रता बनी रही। उसे बेचे कई बरस हो गये मगर आज भी वह स्थान वैसा ही छूटा हुआ है।

कानोड़ से प्रस्थान करते समय हम पुन: बावजी के पास पहुंचे और अर्ज किया कि 'पधारो बावजी' और बस में बैठकर चले आये। बावजी कोई दृश्यवान तो हैं नहीं। बस में हम बावजी की ही बातें करते रहे। भाभीजी बोलीं कि कैसे पता चलेगा कि बावजी अपने साथ पधारे गये हैं। मैंने कहा कि उनका कोई न कोई संकेत होगा जिससे पता चल जायेगा या फिर जब भी पधारेंगे तब पूछ लेंगे।

उदयपुर बस से उतरकर ज्योंही हम घर पहुंचे और नाल चढ़ ही रहे थे कि ऊपर माताजी को बावजी पधारे और सबसे पहली बात यही कही कि इनके (भाभीजी के) मन में जो शंका थी वह नहीं रहनी चाहिए। मैं यहां आ गया हूं। उस दिन यह बात सुन हम सबको बड़ा सन्तोष हुआ कि बावजी अब हमारे साथ हैं।

आषाढ़ी पूर्णिमा तथा कार्तिक पूर्णिमा के दिन शुद्ध गोमूत्र, दूध, पानी, इत्र, पानी से स्नान करा कुंकम लगा पूरवजों का विधिपूर्वक धूप ध्यान अनुष्ठान कर उनका ओछाड़ बदला जाता है। पुराना ओछाड़ बहिन-बेटियों को कापड़े के रूप में दे दिया जाता है।

जिन घरों में एक से अधिक पूरवज होते हैं वे घोड़ले को एक-एक कर आते हैं। ये पूरवज बारह तक होते हैं।

प्रारम्भ में पूरवजों के जो पांच गीत गाये जाते हैं। वे हैं-

(1) अळळ-खळळ तो नदियां व्हैवे, पूरवज धोवत्या धोवे ओ राज
धोवत्या तो म्हारे (घर के एक-एक सदस्य का नाम जोड़ते) ....
सा धोवे पूरवज पाट पधारे ओ राज।

(2) पूरवज आया म्हारी आलियां जी गलियां
फूल बिखेरो चंपा कलियां जी
पूरवज भलां ही पधारो

(3) म्हूं तो दीवो लेइने जोवूं आपरी वाट
कुणी बाई मेली ओ दीवला वाट

(4) कुणी सा री राण्यां घी भरे
(ऐसे ही पति-पत्नी का नाम ले गीत बढ़ाया जाता है।)

(5) पागां बांधी ने बायर आवो म्हारा पूरवज
ढोल देवाडूं माणक चौक में

इसी प्रकार पूरवजों के झूलने का पालना लगाया है। बारी-बारी से सभी महिलाएं उन्हें हलरावण दुलरावण गा मचोला देती झुला रही हैं। ये गीत वस्तुत: पूरवजों की मनस्थिति तथा जीवनधर्मिता के असली दास्तान हैं। मेरी जीजां सोवनबाई (98) ने अपनी लड़की उमराव नलवाया (70) के साथ उन्हीं रागों में जब ये गीत सुनाये तो मैं चकित रह गया।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (13)

-देवीलाल सामर

रूमानिया में अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में अपना भारतीय दल सबसे छोटा ऊंट के मुंह में राई पाकर सामरजी बड़े निराश और बेचैन हुए। प्रस्तुत विवरण में पढ़िये इस मन:स्थिति का मनभीगा वृतान्त

हम भलीप्रकार जानते थे कि हम चाहे कितने ही उत्कृष्ट कलाकार हों किन्तु हम यूरोपीय पुतलियों का स्तर प्राप्त नहीं कर सकते। अत: हमने यही तय किया कि हम पारम्परिक पुतलियों को ही अपना आधार बनाकर कुछ प्रयोग करें। उससे पूर्व हम रामायण नाटिका बना चुके थे। वह विशुद्ध राजस्थानी शैली में रचित नवीन रचना थी जिसने भारत में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर लिया था। हम चाहते तो उसी रचना को रूमानिया सम्मेलन में ले जाते परन्तु उसमें प्रयुक्त होने वाली पुतलियों की संख्या और उसके अत्यंत जटिल रंगमंच को देखते हुए हमने उसे ले जाने का इरादा छोड़ दिया।

उसके बदले 'अमरसिंह राठौड़' को उसके परिमार्जित रूप में ले जाना उचित समझा। इस खेल को हमने 'मुगल दरबार' के नाम से इस तरह रूपान्तरित किया कि उसमें नृत्य मुद्राओं से ही समस्त नाटिका को सराबौर कर दिया। इस कृति में मुगल दरबार अवश्य लगता है। दिल्ली सम्राट विधिवत हाथी पर बैठकर राजदरबार आते हैं। अन्य दरबारीगण भी अपनी नौटंकी बजाने के लिए बड़े ठाठबाट से आते हैं और दरबार में होने वाले नाचगान का मजा लेते हैं।

यह कृति तैयार अवश्य हो गई परन्तु हमें संतोष नहीं था कि यह अन्तर्राष्ट्रीय पुतली समारोह के स्तर तक पहुंच सकेगी। रवानगी के दो दिन पूर्व ही हिन्दुस्तान पाकिस्तान की लड़ाई छिड़ चुकी थी और हमें भारत सरकार का यह भी आदेश मिल चुका था कि विशेष परिस्थितियों के कारण भारत सरकार अपना स्वीकृत अनुदान हमें इस यात्रा के लिए नहीं दे सकेगी।

इस आदेश के बावजूद हमने अपने पूर्व संकल्प को नहीं छोड़ा और हम बम्बई से रूमानिया के लिए उड़ गये। इस भय से कि कहीं हम रोक लिये नहीं जाय, हावड़ तावड़ में यह भी पता लगाना भूल गये कि रूस पहुंचने पर हमें बुडापेस्त जाने के लिए आगे के हवाई जहाज का कनेक्शन मिलेगा या नहीं। न हमें इस बात का भी होश रहा कि प्रत्येक यात्री को दी जाने वाली विदेशी मुद्रा देश छोड़ने से पूर्व हवाई अड्डे पर प्राप्त कर लें। लड़ाई के कारण ईरान के साथ हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं थे इसलिए हमारा जहाज बम्बई से उड़कर सीधा मेस्कोवा पहुंचा, तेहरान में नहीं रूका।

मेस्कोवा जिस समय हम पहुंचे हमारी जेबें पूरी खाली थीं। हवाई जहाज में जो भी दाना-खाना मिला उसके अलावा हमने कुछ भी नहीं खाया। रूसी हवाई अड्डे पर जब वहां के अधिकारियों को हमारी मुसीबत का पता लगा तो एक रात एक दिन के लिए हवाई अड्डे की होटल में नि:शुल्क निवास, भोजन की व्यवस्था हो गई। दूसरे दिन बुडापेस्त तक हवाई जहाज मिल गया और वहां से रेलमार्ग द्वारा बुखारेस्ट जाने की योजना बनी।

बुडापेस्त पहुंचकर वही विषय स्थिति हमारे सामने प्रस्तुत हुई। एक रात यहां पर भी बिताना अनिवार्य था। यहां न किसी भी होटल आदि की व्यवस्था थी न बुडापेस्त के लिए हमारे पास आवश्यक वीजा आदि थे। हमारे पास कुछ-कुछ सामग्री ऐसी थी जो हम अपने मित्रों को भेंट स्वरूप देने के लिए अपने साथ लाये थे। हम उन चीजों को अपने हाथ में लिये इधर-उधर अन्य मुसाफिरों के सामने ले गये तो आकर्षण का केन्द्र बन गये। हमने अपनी दुगर्ति का आभास उन्हें नहीं होने दिया परन्तु जिसने भी उन चीजों को खरीदने की इच्छा प्रकट की उनको हमने बेचना शुरू कर दिया। बात-ही-बात में हमारे पास काफी विदेशी मुद्रा आ गई जिससे हमने बुडापेस्त के रात्रि प्रवास को सुखमय बनाया।

हवाई अधिकारियों की कृपा से हमारे हवाई टिकिट रेल टिकिटों में परिवर्तित हो गये। बुडापेस्त से रेल में बैठकर शाम को बुखारेस्ट पहुंच गये जहां पर हमारे स्वागत के लिये हमारे मेजबान बड़े-बड़े फूलों के गुलदस्ते लिये खड़े थे। एक अत्यंत सुन्दर एवं भव्य होटल में हमारे निवास आदि का प्रबन्ध किया गया। हमें ऐसा लगा कि मुसीबत के दिन समाप्त हुए और सुख के दिन आये परन्तु अन्दर-ही-अन्दर एक ऐसी टीस मन में बैठी हुई थी जो हमें प्रतिपल खरोंच रही थी। हमें किसी भी सूत्र से यह पता नहीं लगा कि चार दिन पूर्व हिन्दुस्तान पाकिस्तान के बीच छिड़ी हुई लड़ाई का क्या हुआ। मातृभूमि के इस संकट से हम अत्यधिक चिंतित थे। होटल के कमरे में लगे रेडियो की सुइयां रात-रात भर हिलाते रहे मगर हिन्दुस्तान कहीं भी पकड़ में नहीं आता।

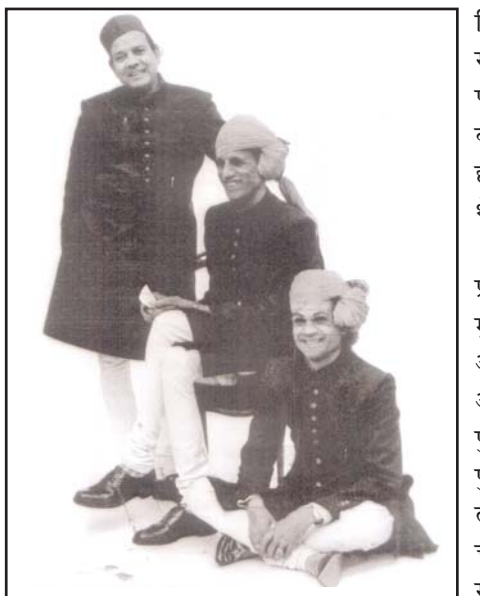

सामरजी, दयाराम तथा तोलाराम

दूसरे दिन विश्व के 35 पुतली दल समारोह में सम्मिलित होने के लिए आ पहुंचे। मुझे पांच वर्ष पूर्व संस्कृति मंत्री प्रोफसर हुमायू कबीर द्वारा कही गई वह बात याद आती रही। उन्होंने कहा था कि भारतीय पुतलियां किसी भी विश्व की पुतलियों का मुकाबला नहीं कर सकती। अगर हमने उन्हें किसी भी प्रतियोगिता में भेजने की मूर्खता की तो काफी हद तक मुंह नीचा करना पड़ेगा।

मुझे सबसे अधिक पीड़ा पहुंचाने लगी जब मैं विश्व के अन्य 34 मुल्कों की पुतलियों की रिहर्सल देख रहा था। कुछ दल तो ऐसे थे जिनके पास दस-से-बीस कलाकार थे। भव्य रंगमंच साथ में था और उसके साथ की समस्त व्यवस्था अपने वे अपने साथ लाये थे।

उनकी पुतलियों की भव्यता और चमत्कारिता देखकर मेरा दिल पहले ही दिन बैठ गया और ऐसा अनुभव होने लगा कि इस समारोह में सम्मिलित होकर हमने अत्यन्त मूर्खता का परिचय दिया है। मुझे सबसे ज्यादा गुस्सा तो भारत सरकार पर आया जिसने हमें अपना स्वयं का रंगमंच एवं प्रकाश व्यवस्था नहीं लाने दी। पुतलियों में विविधता लाने के लिए अधिक कलाकार एवं कला-सामग्री भी हम लाने में असमर्थ रहे।

लगभग चार दिन हमें बुखारेस्ट में आये हुए हो गये, परन्तु हमारे चेहरों पर भयंकर निराशा छाई रही और हमने यह तय कर लिया कि पुतली प्रतियोगिता से हम लोग हट जायें। अधिकारियों ने हमें हर प्रकार की सहायता एवं सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रतियोगिता के लिए लगभग 15 दिन तक प्रदर्शन चलते रहे। हमारा प्रदर्शन आखिरी दिनों में रखा गया।

हमारे पास 'मुगल दरबार' की 33 पुतलियों के अलावा और कुछ नहीं था। न रंगमंच, न परदे, न प्रकाश व्यवस्था और न रंगमंचीय उपकरण। हमारे पास यदि कुछ था तो हमारी ऊंगलियों की करामात और धागों का करिश्मा। बुखारेस्ट का प्रसिद्ध टंडरिका थियेटर हमारे रिहर्सल के लिए निश्चित किया गया। हम रात-दिन रिहर्सल करते रहे परन्तु हमारी साजसज्जा एवं बाह्य उपकरण बढ़ाने के हमारे पास कोई साधन नहीं थे।

समारोह की प्रतियोगिताओं के लिए दो मुकाबले थे। एक आधुनिक पुतलियों का और दूसरा पारम्परिक पुतलियों का। पारम्परिक पुतलियों के प्रयोगी भी लगभग 15 दल थे जिनमें चीन, कंबोडिया, जापान, रूमानिया, जर्मनी, इटली आदि देश प्रधान थे। इन मुकाबलों के लिए विश्व के सात प्रसिद्ध निर्णायक बनाये गये थे जिनमें युनीमा के सेक्रेटरी डॉ. जॉन मलिक भी थे। हमने केवल पारम्परिक पुतलियों की प्रतियोगिता में ही अपना नाम लिखाया, वह भी केवल औपचारिकता मात्र निभाने के लिए।

15 सितम्बर 1965 को हमारा प्रदर्शन रखा गया। दर्शकों से हॉल खचाखच भरा था। ऊपर गेलरी में निर्णायकगण बैठे थे। हमारे से पूर्व चीन, जापान, कंबोडिया आदि देशों के प्रदर्शन हो चुके थे। चीन की पुतलियों की करामात देखते ही बनती थी। वे आसमान में झूलती थीं और शरीर के पचासों तोड़मोड़ दर्शाकर दर्शकों को मुग्ध करती। तारों तथा सूरज से वे बात करती थी तथा बादलों में चलायमान होती थी। इस प्रतियोगिता में उन्होंने दो शैली की पुतलियां प्रस्तुत की थी। एक धागा वाला और दूसरी छाया की। छाया पुतली का कमाल तो देखते ही बनता था।

विविध रंगीन दृश्यावलियों के बीच ये पुतलियां स्वर्गीय अनुभव प्रस्तुत करती थी। उनका चमत्कार देखते ही बनता था। जिस विशिष्ट प्रणाली से ये पुतलियां चलाई जाती थी। उसे गोपनीय रखने के लिए प्रदर्शन मैच के चारों ओर संगीत व्यवस्था रहती थी। इसी तरह अन्य मुल्कों के प्रदर्शन देखकर भी हम दंग रह गये। उनकी पुतलियां तो पारम्परिक थीं परन्तु प्रस्तुतिकरण अति आधुनिक था। यह ऐसा राज था जिसने सबके मन में संदेह उत्पन्न कर दिया मगर हमारे मन में हीनता की भयंकर भावना डोल रही थी।

इस भावना के साथ ही हमने अपना प्रदर्शन चालू किया। जितना उल्लास हमारी पुतलियों को देखने का दर्शकों में था उतनी ही निराशा, शर्मीन्दगी और वेदना हमारे मन में समाई हुई थी। पुतली प्रदर्शन प्रारम्भ हुआ डुगडुगी वाले ने डुगडुगी बजाई और राजा-महाराजाओं का दरबार जुड़ने लगा। चौबदार ने यथोचित उनका सम्मान किया तथा पूर्व निर्धारित सिंहासनों पर उन्हें बिठाया। कोई ऊंट पर आया तो कोई घोड़े पर। अन्त में हाथी पर बैठकर मुगल सम्राट आये। नर्तकी ने नाच दिखलाया। सपेरे एवं गेट वाली ने अपने चमत्कार प्रस्तुत किये। बहुरूपियों ने अपने भेश बदल-बदल कर सबको हंसा-हंसा कर लोटपोट कर दिया। इसी तरह घोड़ा घुड़सवार आया। कच्छी घोड़ियों ने अपना करतब दिखाया। तलवारबाजों ने तलवारों के करिश्मे बतलाये। करतल ध्वनियां लगातार बजती रहीं। अत: यह पता लगाना बड़ा मुश्किल हो गया कि दर्शकगण हमारे प्रदर्शन से खुश हैं या ऊब गये हैं।

प्रदर्शन की समाप्ति पर किसी को रंगमंच के पीछे आने की अनुमति नहीं हुई। न किसी को निर्णायकों से मिलने दिया गया। यह विश्व प्रतियोगिता वाला प्रदर्शन था अत: किसी भी अखबार वाले को पुतलियों के सम्बन्ध में कोई बात छापने की अनुमति नहीं थी। चुपचाप दर्शकगण हॉल छोड़कर बाहर चले गये। निर्णायकगण जिस तरह कतारबद्ध आये थे, वैसे ही कतारबद्ध चले गये।

विश्व प्रतियोगिता का हमारा यह आखिरी प्रदर्शन था। हमने समझा जान बची लाखों पाये, किसी तरह प्रतियोगिता पूरी हुई परन्तु मन में बराबर यह लगी हुई थी कि एक तो राष्ट्राज्ञा की अवहेलना करके हम इधर आये और फिर भारत का काला मुंह कराने इतना निकम्मा प्रदर्शन दिया। यह प्रदर्शन प्रात:कालीन समय में था। दोपहर भोजन भी ठीक से नहीं किया। शाम को सभी दलों का हेलमेल समारोह था। दूसरे दिन प्रात: प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित होने वाले थे।

हमारा मन किसी बात में नहीं लग रहा था। सोच रहे थे क्या मुंह लेकर भारत लौटेंगे। यात्रा के टिकटों के जो 35000 रूपये सरकार के खर्च कर चुके थे, उसे राजाज्ञा के अनुसार पुन: लौटाना पड़ेगा। यह रकम कहां से आयेगी। खुशी की बात केवल यह थी कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान की लड़ाई 17 दिन चलकर खत्म हो चुकी थी। उसकी पूरी खबरें तो हमें ज्ञात नहीं थी परन्तु यह अवश्य मालूम हो गया कि किसी के बीच बचाव से यह युद्ध समाप्त हुआ।

रात को हेलमेल समारोह में हम भी गये। हमारी पोशाक ही ऐसी होती थी जिससे सबओर आकर्षण पैदा हो जाता था। सबके सौहार्द के भागीदार तो हम बन ही चुके थे परन्तु किसी ने हमारे प्रदर्शन के सम्बन्ध में कोई खास बात व्यक्त नहीं की। कुछ ने तारीफ भी की तो हमें भाषा की अनभिज्ञता के कारण कुछ भी पता नहीं लगा।

डॉ. जॉन मलिक भी इस हेलमेल आयोजन में शरीक थे। वे खिसकते हुए मेरे पास आये। भाषा तो हम एक-दूसरे की समझ नहीं सकते थे परन्तु हम पिछले पांच वर्षों से एक-दूसरे के सम्पर्क में थे। वे चेक भाषा जानते थे और मैं अंग्रेजी अत: एक-दूसरे को समझने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। वे मेरे पास आए और अपना हाथ ऊंचा करके अंगूठा दिखाने लगे।

अंगूठा दिखाना भारत में बहुत ही अपशकुन समझते हैं। उसका तात्पर्य समझने में मुझे देर नहीं लगी, क्योंकि श्रीयुत जॉन मलिक एक निर्णायक भी थे। उन्होंने निश्चित ही यह संकेत हमें दे दिया कि हमारा प्रदर्शन विकट था। अफसोस तो हमें इसलिए नहीं हुआ कि क्योंकि हमारा प्रदर्शन वाकई विकृत ही था। मेरे साथियों में भी इस बात की सहमति थी। केवल गोविन्द ही ऐसा था जिसके मन में इस अंगूठे का रहस्य रहस्य ही बना रहा।

- क्रमश

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।